भूमिका

मेरा मनोरथ बहुत दिन से था कि महात्मा
नल और दमयंती का वर्णन बिपत्ति समय का
कि महा भारत के बीच में था संस्कृत से भाषा
रहे अब परमेश्वर कृपा से पूरा हुआ यह वृत्तान्त
जगह और कई प्रकार से छपगया है परन्तु
जैसा महाभारत में बन पर्वस्थ था वैसा आर्य
में यथार्थ उल्था किया जो महाशय राजा नल
दमयंती का वर्णन प्रीति पूर्वक पढ़ेंगे वा सुनेंगे
को कलि की बाधा न होगी, सब सज्जनों से
ना है कि जहां कहीं भूल हो कृपाकर शुद्ध क-
वा मुझ को उस भूल से सूचित करें इस वृत्तान्त
ने से शोक व हर्ष और महात्मा नल का सत्य
रूढ़ रहना भली भांति बिदित होजायगा
न लोग इस को एक बार अवश्य पढ़ें अथवा

दोहा

व्यापक सब में रम रह्यौ, अन्तर जामी सृष्टि ।
बार बार विनती करों, पूरन कर मम इष्टि ॥ १ ॥
परम दयालू ज्ञान निधि, गुणातीत अज ईश ।
तीन ताप नाशक प्रभू, दीन बंधु जगदीश ॥ २ ॥

पं० मुरलीधर शर्म्मा
स्थान चीचली

—ɔ∞O∞c—

राजा नल का जीवन चरित्र

प्रथमोऽध्यायः

महाराजा युधिष्ठिर जब द्यूत में अति उदास हुए तब बृहदश्व महर्षि ने राजा नल का वृत्तान्त कहना आरंभ किया जिस रीति से नीचे वर्णन किया गया॥ बृहदश्व बोले, अच्युत राजा युधिष्ठिर सावधान होकर भ्राताओं के साथ सुनो जो राजा तुम से अधिक दुखी हुआ, निषधदेशों में बीरसेन नाम से विख्यात राजा हुआ उस का पुत्र नल नाम अर्थ में पंडित था, वह राजा छल द्वारा पुष्कर से जय किया गया यह हमने सुना और भार्या के साथ अति दुखी बनवासी हुआ, हे राजन्! उस बनवासी के कभी न दास न शेष हुए नाथ न भ्राता न बांधव, और आप देवताओं की तुल्य वीरभ्राताओं तथा ब्रह्मरूप श्रेष्ठ ब्राह्मणों से युक्त हो इस कारण सोचकरने के योग्य नहीं हो, युधिष्टिर बोले हे वक्ताओं में श्रेष्ठ! मैं महात्मा नल के चरित्र को विस्तार के साथ सुना चाहता हूं सो मुझ से कहने के योग्य हो॥

प्रथमोऽध्यायस्समाप्तः

द्वितीयोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले बीरसेन का पुत्र बली नल नाम राजा हुआ जो कि इष्ट गुणों से युक्त रूपवाण और अश्व विद्या में पंडित था, वह देव राजा अर्थात् इन्द्र के समान राजाओं के मस्तक पर स्थित हुआ और तेज से सूर्य की तुल्य सब के ऊपर विराजमान हुआ, ब्रह्मण्य, वेद जानने वाला शूर, निषध देशों में राजा था अक्ष विद्या को प्रिय मानने वाला सत्य वादी महा अक्षौहिणी का स्वामी, श्रेष्ठ स्त्रियों का ईक्षित उदार जितेन्द्री रक्षा करने वाला धनुष धारियों में श्रेष्ठ साक्षात स्वयं मनुजी के तुल्य था, इसी प्रकार विदर्भ देशों में भीम नाम राजा हुआ जो कि भयानक पराक्रम वाला शूर सब गुणों से युक्त संतान हीन और संतान का अभिलाषी था, हे भरत वंशी उस बड़े सावधान ने संतान के अर्थ परम यत्न किया दमन नाम ब्रह्म ऋषि उस के पास आये, हे राजेन्द्र उस धर्मज्ञ संतान के इच्छामान राजा भीमने पटरानी के साथ उस बड़े तेजस्वी ऋषि को सत्कार से प्रसन्न किया, महा यशस्वी दमन ऋषि ने उस भार्या सहित राजा के अर्थ कन्या रत्न दमयन्ती नाम और बड़े सब गुणों से युक्त भयानक पराक्रम वाले तीन पुत्र दम, दन्त, दमन नाम रूप वर को दिया अर्थात् यह कहा कि तेरे गृह में एक कन्या और तीन पुत्र होंगे, उस समध्यमा दमयंती ने

लोकों के मध्य रूप तेज यश शोभा सौभाग्य के द्वारा यश को पाया, उसके पीछे उस के युवा होने पर समलंकृत दासी और सखियों का एक २ सैकड़ा उस की उपासना अर्थात सिदकाई करने लगा जिस प्रकार सचिइन्द्रानी को, वहां सखियों के मध्य राजा भीम की पुत्री सब आभरणों से भूषित और निर्दोष अंग इस प्रकार शोभायमान हुई जैसे बरसा के बादलों के मध्य बिजली, वह दीर्घ नेत्र लक्ष्मी की तुल्य अत्यंत रूप वान थी वैसी रूपवती देवता और यक्षों में कहीं नहीं देखी, और मनुष्य लोकों और दूसरे लोकों में भी न देखी न सुनी, वह सुंदरी बाला देवताओं के चित्त को भी प्रसन्न करने वाली थी, और नरोत्तम नल भी पृथ्वी पर और लोकों में अप्रातिम और आप अपने रूप से मूर्तिमान कामदेव की समान हुआ, उस के समीप कुतूहल से नल की प्रशंसा की और नल के समीप बारंबार दमयंती की प्रशंसा किया, निरंतर गुणों को सुनते उन दोनों की प्रीति बिना दर्शन उत्पन्न हुई, हे कौन्तेय वह हृदय में शयन करने वाला काम परस्पर वृद्धि युक्त हुआ, तब नल हृदय में उस काम के धारण करने को समर्थ नहीं हुआ अंतःपुर के समीप विद्यमान बन के मध्य एकान्त में प्राप्त रहता था, उस के पीछे, उसने सुनहरी पक्ष वाले हंसों को देखा उन बन चारियों के मध्य एक पक्षी को पकड़ लिया, तब उसके पीछे अंतरीक्ष में प्राप्त पक्षी ने नल

को कहा, हे राजन मैं तेरे हाथ से मारने को योग्य नहीं हूं तेरा प्रिय करूंगा; हे नैषध तुम को दमयंती के समीप कहूंगा जिस प्रकार वह तेरे सिवाय दूसरे पुरुष को कभी नहीं चाहैगी, उस के पीछे इस प्रकार कहे हुए राजा ने हंस को छोड़ दिया फिर वे हंस उड़कर विदर्भ देशों को गये, तब फिर वे पक्षी विदर्भ नगरी को जाकर दमयंती के समीप भूमि पर उतरे उसने उन गणों को देखा, वह सखियों से युक्त और हृष्ट उन अद्भुत रूप आकाश गामियों को देखकर पकड़ने को शीघ्र पास गई, फिर हंस नित्य स्त्रियों के वन में इधर उधर फैल गये तब एक २ कन्या उन हंसों की ओर दौड़ी, फिर दमयंती समीप ही जिस हंस की ओर दौड़ी वह मानुषी वाणी को करके दमयंती को बोला, हे दमयंती निषध देशों में अश्विनी कुमारों के समान रूप वान नल नाम राजा है उस के समान मनुष्य नहीं है, वह आप रूप से मूर्तिमान कामदेव की तुल्य हुआ, हे वरार्णिनि जो तुम उसकी भार्या हो, तो हे सुमध्यमे तेरा जन्म और यह रूप सफल होवै, हमने देवता गंधर्व मनुष्य उरग और राक्षसों को देखा, हमने उस प्रकार का नहीं देखा तुम भी स्त्रियों में रत्न हो और नल नरों में श्रेष्ट है, विशिष्ट का विशिष्ट के साथ काम युद्ध गुण वान होवै, हे राजन हंस से इस प्रकार कही हुई दमयंती वहां उस हंस को बोली तुम भी इस प्रकार नल से कहो, हे राजन पक्षी ने विदर्भ

की कन्या को तथास्तु कहकर निषध देशों को आकर नल से सब वर्णन किया ॥

द्वितीयोऽध्यायःसमाप्तः

तृतीयोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले हे भरतवंशी वह दमयंती हंस के उस वचन को सुनकर तब से ही नल के विषय व्याकुल हुई, तब उसके पीछे दमयंती चिंता युक्त दीन विवर्ण मुख कृश और श्वास लेने वाली हुई, फिर क्षणमें ही वह दृष्टि ध्यान परा उन्मत्त दर्शन पांडुवर्ण और कामदेव से आविष्ट मन हुई, वह शैया आसन और भोगों में कहीं रति को नहीं पाती थी फिर हाय २ करके रोती न दिन व रात को सोती; तब उन सखिओं ने उस रूपवती अस्वस्त उस दमयंती को अंगों की चेष्टा से जाना उस के पीछे दमयंती की सखियों ने विदर्भ के स्वामी, राजा के पास अस्वस्थ दमयंती को निवेदन किया, राजा भीम ने सखीगण से उस दमयंती को सुनकर अपनी पुत्री के विषय उस बड़े कार्य को विचार किया, अब मेरी यह पुत्री अस्वस्थ दीखती है क्या बात है, उस राजा ने अपनी पुत्री को युवान विचार कर आप से करने योग्य दमयंती के स्वयंवर को देखा, हे प्रभु उस राजाने राजाओं को निमंत्रण

किया कि हे वीरो यह स्वयंवर देखना चाहिये तब पृथ्वी के स्वामी सब राजा दमयंती के स्वयंवर को सुनकर राजाभीम की आज्ञा से हाथी, घोड़ा, और रथ के घोष से पृथ्वी को पूर्ण करते विचित्र माला आभरणों युक्त अच्छी अलंकृत दर्शन योग्य सेनाओं के साथ राजाभीम के पास गये, महा बाहु भीम ने उन महात्मा राजाओं की पूजा को यथा योग्य किया और वे पूजित वहां बसे, इसी काल पर देवऋषियों में उत्तम महात्मा महा ज्ञानी महा व्रती अच्छे पूजित नारद और पर्वत ऋषि इस लोक से जाकर इंद्र लोक में घूमते देवताओं के भवनों में प्रवेश हुए, उस के पीछे समर्थ इंद्र ने उन दोनों की पूजाकर उन की सर्वगत कुशल और अनामय को पूछा, नारदजी बोले हे समर्थ देवता ईश्वर हम दोनों की कुशल सर्वत्र प्राप्त है और संपूर्ण लोक में राजा कुशली है, बृहदश्व बोले बल वृतासुर के मारने वाले इंद्र ने नारदजी के वचनों को सुनकर पूछा कि धर्म के जानने वाले और जीवितकोछोड़ कर लड़ने वाले राजा लोग जो विमुख न होने वाले काल पर शस्त्र से मरन को पाते हैं जिसी प्रकार मेरा, वे शूर क्षत्री कहां हैं मैं उन अपने प्रिय अतिथि आये हुए राजाओं को नहीं देखता हूं, इंद्र से इस प्रकार कहे हुए नारद जी बोले हे इंद्र मुझ से सुन जिस कारण से राजा लोग नहीं दीखते हैं, राजा विदर्भ की पुत्री दमयंती नाम से विख्यात है जिस ने

रूप से पृथ्वी पर स्त्रियों को उलंघन किया है, हे इंद्र थोड़े ही काल में उस का स्वयंवर होगा, वहां राजा और सब राजपुत्र जाते हैं, हे बल वृत के मारनेवाले राजा लोग उस लोक की रत्न रूप कन्या को चाहते विशेष इच्छा मान हुए, इस बात के कहने पर देवताओं में श्रेष्ठ लोकपाल अग्नि देवता सहित देव राज के समीप आये, उसके पीछे उन सबने नारदजी के कहे वाक्य को सुना और सुनते ही हृष्टमन बोले कि हम भी जावेंगे, हे महाराज उस के पीछे वे सब देवतागण और वाहन सहित विदर्भ देशों को गये जिस मार्ग से सब राजा जाते थे, हे कौन्तेय अदीन आत्मा और दमयंती का अनुव्रत राजा नल भी राजाओं के समागम को सुन कर चला, उस के पीछे देवताओं ने मार्ग में भूतल पर स्थित नल को देखा जो कि रूप संपत्ति से साक्षात मूर्तिमान कामदेव की तुल्य था, वे लोकपाल उस राजा नल को सूर्य की तुल्य प्रकाशमान देख कर रूप संपत्ति से विस्मित और नष्ट संकल्पस्थित हुए, उस के पीछे देवता आकाश तल से उतरकर और अंतरीक्ष में विमानों को खड़ा करके राजा नल को बोले, हे निषधदेशों के राजेंद्र नल आप सत्य वृत हैं हमारी सहायता करो हे नरोत्तम हमारा दूत हो॥

तृतियोऽध्याया समात

चतुर्थोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले हे भरतवंशी नल उसके साथ यह प्रतिज्ञा करूंगा करके फिर कृतांजलि और समीपास्थित ने इन को पूछा, निश्चय आप कौन हैं और यह कौन हैं मैं जिस का इक्षित दूत हूं और तुम्हारा वह कार्य मुझ से कौन है सत्य कहो, नल से इस प्रकार कहने पर इंद्र देवता बोले हम को दमयंती के अर्थ आये हुए देवता जानो, हे राजन् मैं इंद्र हूं यह अग्नि है उसी प्रकार यह जलों का स्वामी वरुण है और मनुष्यों के शरीरों का नाश करने वाला यह यमराज भी है, तुम ही आये हुए हम देवताओं को दमयंती से कहो कि यहां इंद्र आदि लोकपाल दर्शन कांक्षी आते हैं, इंद्र अग्नि वरुण और यम नाम देवता तुम को प्राप्त करना चाहते हैं उन में एक देवता को पतित्व में वरो, इंद्र से इस प्रकार कहा हुआ यह नल हाथ जोड़ कर बोला एक प्रयोजन से प्राप्त होने वाले मुझ को भेजने को योग्य नहीं हो, हे ईश्वरो संकल्प करने वाला मनुष्य किस प्रकार दूसरे के अर्थ स्त्री से ऐसा कहने को उत्साह करै उस कारण से मुझ पर क्षमा करो, देवता बोले हे राजा निषध तू हमारे साथ प्रथम यह प्रतिज्ञा करके कि करूंगा फिर किस कारण से नहीं करेगा जाओ देर मत करो, वृहदश्व बोले उन देवताओं से इस प्रकार कहा हुआ वह नल फिर बोला

कि राज भवन अच्छे प्रकार रक्षित है प्रवेश करने को कैसे उत्साह करूं, इंद्र फिर उस को बोले कि प्रवेश करेगा, वह नल बहुत अच्छा कहकर दमयंती के भवन को गया, वहां पर सखीगण से युक्त शरीर और शोभा से दीप्यमान वरवर्णिनी, अत्यंत कोमल अंग, सूक्ष्म कमर, सुंदर नेत्र, और अपने तेज से चंद्रमा की प्रभा को निरादर करने वाली दमयंती को देखा उस चारु हासिनी को देखते ही उसका काम बढ़ा सत्य करने के इच्छा मान नलने हृदय में शयन करने वाले काम को धारण किया, उस के पीछे वे श्रेष्ट स्त्रियां राजा नल को देख कर उस के तेज से अभिभूत और संभ्रांत आसनों से उठ खड़ी हुई अति प्रसन्न और आश्चर्य से युक्त उन स्त्रियों ने नल की प्रशंसा की, इस से नहीं बोली परंतु मनोंसे पूजन किया, महात्मा का रूप कांति और धैर्य अद्भुत है यह कोई देवता वा यक्ष वा गंधर्व होगा, वे श्रेष्ठ स्त्रियां उसके तेज से धर्षित और लज्जावती उस से कुछ कहने को समर्थ नहीं हुई, इसके पीछे मंदमुस्कान पूर्वक बोलने वाली आश्चर्य युक्त दमयंती इस मंदमुस्कान करने वाले वीर नल को बोली, हे निर्दोष सब अंग मेरे कामदेव को बढ़ानेवाले, तुमको जाना चाहती हूं यहां किस प्रकार आना हुआ, मेरा भवन अच्छा रक्षित है और राजाभी उस आज्ञा वाला है, दमयंती से इस प्रकार कहे हुए नलनें उस को उत्तर दिया हे कल्याणी

यहां आये हुए मुझको देवताओं का दूत जानो, इंद्र अग्नि वरुण और यम देवता तुम को प्राप्त करना चाहते हैं, हे शोभने उन्हों में एक देवताको पति कर, उन्हीं के प्रभाव से आतिथ्य में प्रवेश हुआ और मुझ प्रवेश करने वाले को किसी ने नहीं देखा और रोका भी नहीं, हे भद्रे मैं इसी लिये सुरसत्तमों की ओर से भेजा गया, हे शुभे इस बात को सुनकर बुद्धि करो जिस प्रकार चाहती है।

चतुर्थोऽध्याय समाप्त

—◦—

पंचमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले वह दमयंती श्रद्धा के अनुसार देवताओं के अर्थ नमस्कार करके और हँस कर बोली हे राजन् मुझ को वरो, मैं आप की क्या सेवा करूं हे ईश्वर मैं और जो दूसरा कुछ मेरा धन है वह सब आपका है, विश्वास पूर्वक विवाह करो, हे राजन् हंसों का जो वचन है वह मुझ को जलाता है, हे वीर तेरे ही निमित्त मैंने राजा इकट्ठे किये, हे मानद तुम जो मुझ चाहने वाली को उत्तर दोगे तो मैं आप के कारण से विष अग्नि जल और फांसी में स्थित हूंगी, तब दमयंती से इस प्रकार कहे हुए नल ने उस को उत्तर दिया, लोकपालों के स्थित होने पर किस कारण से

मनुष्य को चाहती है, मैं जिन लोक कर्त्ता महात्मा ई-श्वरों के पद रज की तुल्य नहीं हूं उन में मन लगाना चाहिये, मनुष्य देवताओं के अप्रिय को कर्त्ता मृत्यु को पाता है, हे अदोष अंग मुझ को रक्षा करो और सुरोत्तमों को वर, देवताओं को प्राप्त करके रज हीन वस्त्रों तथा दिव्य और चित्र मालाओं और मुख्य भूषणों को भोगो, जो इस संपूर्ण पृथ्वी को संक्षेप करके फिर निगलता है उस देवताओं के ईश्वर अग्नि को कौन पति नहीं करे, जिस के दंड भयसे सब जीव समूह इकट्ठे धर्म को ही करते हैं, कौन स्त्री उसको पति नहीं वरे, उस धर्मात्मा महात्मा दैत्य दानवों के मर्दन करने वाले सब देवताओं के महेन्द्र को कौन स्त्री पति नहीं वरे, इस सुहृद वचन को सुन और अशंक मन से लोकपालों के कारण को करना चाहिये जो तू मानती है, इसके पीछे नल से इस प्रकार कही हुई वह दमयंती शोकोत्पन्न जल से पूर्ण नेत्रों के साथ इस वचन को बोली, हे पृथ्वी पति मैं सब देवताओं के अर्थ नमस्कार करके तुमही भर्त्ता को वरती हूं, यह तुम से सत्य कहती हूं, उसके पीछे राजा उस कंपित और कृतांजलि को बोला हे कल्याणी हे भद्रे, दूत भाव से प्राप्त होकर उसी प्रकार करना उचित है; मैं विशेष कर देवताओं के समीप प्रतिज्ञा करके और दूसरे के अर्थ यत्न का आरंभ करके यहां कैसे अपने प्रयोजन को उत्साह करूं, जो यह धर्म है तो

उस से मेरा भी स्वार्थ होवे, हे भद्रे इस प्रकार अपने प्रयोजन को करूंगा उसी प्रकार करना चाहिये, उस के पीछे शुचि स्मिता दमयंती अश्रु से व्याकुल वचन को धीरे २ कहती राजा नल को बोली, हे नरेश्वर यह अक्षय उपाय मैंने देखा, हे राजन् जिस से किसी प्रकार आप का दोष न होगा, हे नर श्रेष्ठ तुम और देवता जिन के आगे चलने वाले इंद्र हैं सब साथ आओ जहां मेरा स्वयंवर है, हे नरेश्वर उस के पीछे मैं तुम को लोकपालों के समीप वरूंगी हे नरोत्तम इस प्रकार दोष नहीं होगा, हे राजन् दमयंती से इस प्रकार कहा हुआ राजा नल फिर वहां आया जहां पर देवता इकट्ठे थे, लोकपाल महेश्वरों ने इस प्रकार आते हुए उसको देखा और देखकर फिर वह सब ही वृतान्त इस का पूछा, हे राजन् शुचि स्मिता दमयंती तुमने देखी हम सब को क्या कहा, हे निष्पाप भूमि पति उस को कहो, नल बोला मैं आप से आज्ञा दिया हुआ दमयंती के भवन को प्रवेश हुआ, जो कि दंडधारी वृद्ध पुरुषों से युक्त (महान् राज द्वार प्रवेश वाला था) आप के तेज से सिवाय उस राजपुत्री के किसी मनुष्य ने वहां प्रवेश करने वाले मुझ को नहीं देखा, हे देवेश्वरो मैंने इस की सखियां देखीं और उन से भी मैं देखा गया, वे सब मुझ को देख कर आश्चर्य युक्त हुईं, हे सुरोत्तमो मेरी ओर से आप के वर्णन होने पर वह सुंदर मुखी दमयंती मेरा संकल्प

करने वाली मुझ को ही वरती है, वह बाला मुख को बोली कि हे नरोत्तम सब देवतों सहित आओ जहां मेरा स्वयंवर है, हे नैषध मैं तुम को उनके समीप वरूंगी हे महा बाहु इस प्रकार आप का दोष नहीं होगा हे स्वर्ग के ईश्वर देवताओ इतना ही वृत्तान्त है जिस प्रकार मैंने कहा शेष अप्रमाण हो।

पंचमोऽध्याय समाप्त

षष्ठमोऽध्यायारंभ

बृहदश्व बोले इस के पीछे शुभ काल तिथा पुण्य तिथि और क्षण के प्राप्त होने पर राजा भीम ने स्वयंवर में राजाओं को बुलाया, काम देवा से पीडित और दमयंती को चाहने वाले सब राजा उस वचन को सुनकर शीघ्र आये, ये राजा कनक स्तंभ वाले रुचिर वहिद्वार से शोभायमान रंग में प्रवेश हुए, वहां गंध और मालाओं के धारण करने वाले और उज्वल कुंडल धारी सब राजा लोग नाना प्रकार के आसनों पर बैठ गये, जिस प्रकार नागों से भोगवती और व्याघ्रों से गुहा को पूर्ण देखें उसी प्रकार उस पवित्र राज सभा को पुरुषोत्तमों से पूर्ण देखा, उस सभा में परिघ की उपमा रखने वाली रूप वर्ण से मनोहर और पुष्टभुजा पांच सिर रखने वाले सर्पों की समान

दृष्टिगोचर हुई, राजाओं के सुंदर केशान्त और सुन्दर नासिका नेत्र भ्रू, और मुख शोभायमान हुए, जैसे नक्षत्र आकाश में, उस के पीछे शुभ मुखी दमयंती अपनी प्रभा से राजाओं के नेत्र और मनों को हरण करती रंग में प्रवेश हुई उन देखने वाले महात्माओं की दृष्टि उस के अंगों पर पड़ी और उसी २ अंग पर लगी रही और वहां से चलित न हुई, हे भरतवंशी उसके पीछे राजाओं के नाम का कीर्तिन होने पर दमयंती ने तुल्य रूप वाले पांच पुरुषों को देखा, उस के पीछे उन सब तुल्य रूप स्थितों को देखकर दमयंती ने संदेह से राजा नल को नहीं जाना, उन्हों में जिस २ को देखा उस २ को राजा नल जाना इस के पीछे शोचती हुई उस मानिनी ने विचार किया किस प्रकार देवताओं को जानूं और कैसे राजानल को जानूं, इस प्रकार शोचती वह दमयंती अति दुखी हुई, हे भरतवंशी उसने सुने हुए देव चिन्हों को विचार किया, मैंने देवताओं के जो चिन्ह वृद्धों से सुने, वहां भूमि परस्थित उन देवताओं में एक भी उन चिन्ह को नहीं देखती हूं, उसने बहुत प्रकार से निश्चय करके और वारंवार विचार कर देवताओं की शरण विषय समय को प्राप्त माना, वह हाथ जोड़कर वचन मन से देवताओं के अर्थ नमस्कार करके, कांपती हुई यह बोली जिस प्रकार मैंने हंसों के वचन सुनकर राजा निषध को पतित्व में वरा, हे देवताओ उस सत्य से उसे मुझे जतलाओ

और जिस प्रकार मैं मन और वचन से दूसरे में मन नहीं लगाती हूं, हे देवताओ उस सत्य से उस को मुझे जतलाओ और जिस प्रकार वह राजा निषध देवताओं की ओर से मेरा भर्त्ता रचा गया, उस मेरे सत्य से देवता उसी को मुझे जतलाओ, जिस प्रकार मैंने नल के आराधन में यह वृत आरम्भ किया हे देवताओ उस सत्य से उसी को मुझे जतलाओ महेश्वर लोकपाल अपनेही रूपको करो, जिस प्रकार पवित्र यश वाले राजा को मैं भी जानूं, दमयन्ती के उस करुणा विलाप को सुनकर और नल में परम निश्चय और सच्चे अनुराग को और नल के मनकी शुद्धि बुद्धि भक्ति और प्रीति को देखकर, देवताओं ने शरीर धारण विषय अपनी सामर्थ्य को उसी प्रकार किया, जिस प्रकार दमयन्ती ने कहा, उस दमयन्ती ने सब देवताओं को स्वेद हीन स्तब्ध लोचन [पलक लोचन मारने से रहित नेत्र] और हर्षित माला वाले रज से हीन और पृथ्वी को स्पर्श न करते स्थित देखा, और छाया रखने वाला म्लायमान माला वाला और स्वेद से युक्त और भूमि पर स्थित राजा नल एक निमेष में ही जाना गया, हे भरतवंशी पांडव उस भीम की पुत्री दमयन्ती ने उन देवताओं की और पवित्र यश वाले नल को देखकर, धर्म से राजा निषध को वरा, उस बड़े नेत्र और अति लज्जायमान ने वस्त्रांत पर पकड़ लिया, उस वर वर्णिनी ने वहां पर परम शोभाय-

गान माला को स्कंधदेश पर छोड़ा और इस को पति तत्व में वरा, हे भरतवंशी उस के पीछे वहां पर राजाओं की ओर अकस्मात हा हा शब्द कहा गया और देवताओं और महर्षियों से भला भला यह कहा गया, राजा नल की प्रशंसा करने वाले आश्चर्य युक्त पुरुषों से शब्द उच्चारण किया गया, हे कौरव्य वीरसेनके पुत्र राजा नलने अति हृष्ट अंतरात्मा के साथ उसे वरा दमयन्ती को आश्वासन किया, हे कल्याणी जिस कारण तू देवताओं के समीप पुरुषों को चाहती है, उस कारण से तेरे वचन में प्रीति करने वाले मुझ भरता को जान, हे शुचिस्मिते जब तक मेरे प्राण शरीर में स्थित रहेंगे, तब तक तुम में प्रीति रखने वाला हूंगा, यह तुझ से सत्य कहता हूं, तथा कृतांजलि दमयन्ती ने वचनों से नल को प्रसन्न करके, फिर वे परस्पर प्रसन्न हो दोनों अग्नि पुरोगम देवताओं को देख कर मन से उन्हीं देवताओं की शरण गये, दमयन्ती से राजा नल के वरे जाने पर वह तेजस्वी अति हृष्ट मन सब लोकपालों ने नल के अर्थ आठ वर दिये, प्रसन्न मन शचीपति इंद्रने नलके अर्थ दो वर दिये १ यज्ञ में देवताओं का प्रत्यक्ष दर्शन, २ उत्तम और शुभ गति, हुत को भोजन करने वाले अग्नि देवता ने उन नल के अर्थ दो वर दिये- १ अपना प्रगट होना जहां पर नल चाहे, २ अपने तुल्य प्रभावान लोकों को, यम देवता ने अन्न रस और धर्म में परमास्थित को दिया, और

जलों के स्वामी वरुणने दो वर दिये, १ जलों का प्रगट होना जहां पर नल चाहे, २ उत्तम गंध से युक्त माला, सबने दो २ वर दिये, ये देवता इस प्रकार वरों को उसे देकर स्वर्ग को गये, आश्चर्य से युक्त प्रसन्न राजा लोग इस के और दमयन्ती के विवाह को देख कर अपनी राजधानियों को गये, पार्थिवेन्द्रों के चले जाने पर प्रसन्न और बड़े मन वाले राजा भीमने दमयन्ती और नल के विवाह को कराया, द्विपादों में श्रेष्ट नल वहां इच्छा के अनुसार वास करके भीम से आज्ञा दिया हुआ अपने नगर को गया, हे राजन् वह पवित्र यशवाला राजा स्त्री रत्न को पाकर उस के साथ रमण करने वाला हुआ, जिस प्रकार बल वृत्रासुर का मारने वाला शचि के साथ, अति प्रसन्न और सूर्य की तुल्य प्रकाशमान धर्म से पालन करके वीर राजा नलने प्रजा को प्रसन्न किया, बुद्धिवान नल ने नहुष के पुत्र ययाति के समान अश्वमेध यज्ञ और पूर्ण दक्षिणा वाले दूसरे बहुत यज्ञों से भी यतन किया, फिर देवता की उपमा रखने वाला नल दमयन्ती के साथ रमण योग्य वनों और उपवनों में विहार करने वाला हुआ, बड़े मन वाले नल ने दमयन्ती से इंद्रसेन नाम पुत्र और इंद्रसेना नाम कन्या को उत्पन्न किया हे राजन् इस प्रकार यज्ञ करते और विहार करते उस राजा नलने धन से पूर्ण पृथ्वी को रक्षा किया ॥

षष्ठमोऽध्यायसमाप्तः

सप्तमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले दमयन्ती से राजा नल के वरे जाने पर बड़े तेजस्वी जाते हुए लोकपालों ने कलियुग के साथ आते हुए द्वापर को देखा, इस के पीछे बल वृत्तासुर के मारने वाले इंद्र कलि को देखकर बोले, हे कलि, अपने सारथी द्वापर के साथ कहां जावेगा, उस के पीछे कलि इंद्र को बोला मैं दमयन्ती के स्वयंवर को जाकर उस को वरूंगा मेरा मन उस में लगा है, इंद्र हँस कर उस को बोले कि वह स्वयंवर समाप्त हुआ, और उस ने हमारे समीप राजा नल पति वरा, जब इंद्र से इस प्रकार कहा हुआ कलि कोप से युक्त होकर सब देवताओं को संबोध करके इस वचन को बोला, जो उस ने देवताओं के मध्य मानुष को पति प्राप्त किया, वहां उसका बड़ा दंड धारण न्याय के योग्य होवे, कलि से इस प्रकार कहे हुए उन देवताओं ने उत्तर दिया हमारी ओर से भले प्रकार आज्ञा होने पर दमयंती से नल वरा गया, सब गुणों से युक्त राजा नल को कौन स्त्री आश्रित नहीं करे जो व्रत करने वाला सब वेद धर्मों को ठीक जानता है, और जो सब चारों वेदों को जिसका

पांचवां इतिहास है पढ़ता है और जिस के गृह में चारों वेद सदा धर्म से यज्ञ में तृप्त हैं, और जो अहिंसा में प्रीति रखने वाला सत्य वादी और दृढ़ वृत है और जिस को लोकपाल के समान पुरुषोत्तम राजा में सत्य (यथार्थ भाषण) धृति ज्ञान तप (सुधर्म निष्ठ) शौच (बाह्याभ्यन्तर का) दम (बाह्येन्द्रियनिग्रह) शम (मनका निग्रह) ये सब गुण ध्रुव हैं. अर्थात विघ्नों से भी अबाध्य हैं, हे कलि जो पुरुष ऐसे रूप वाले नल को शाप देने की इच्छा करे वह मूढ आप को शाप देवै और आप को मारे, हे कलि जो पुरुष ऐसे गुण वान नल को शाप दिया चाहै वह बड़े अगाध हृदय रूप और कष्ट नरक में डूब जावै, देवता कलि और द्वापर को इस प्रकार कहकर स्वर्ग को गये, उस के पीछे देवताओं के चले जाने पर कलि द्वापर को बोला है द्वापर मैं कोप को दूर करने को उत्साह नहीं करूं, नल के शरीर में बसूंगा, मैं उस को राज से भ्रष्ट करूंगा वह दमयन्ती के साथ आसक्ति नहीं करेगा तू भी पाशों में प्रवेश होकर सहायता करने योग्य है ॥

सप्तमोऽध्यायसमाप्तः

अष्टमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले वह कलि द्वापर के साथ इस

प्रकार संकेत करके उस के पीछे वहां से आया जहां राजा नल था, वह कलि नित्य अंतर को चाहता निषध देशों में दीर्घ काल तक बसा, फिर कलि ने बारवें बरस इसके अंतर को देखा, राजा नल ने मूत्र करके आचमन न करके और दोनों पांव के शौच को न करके संध्योपासन किया, वहां कलि ने इस में प्रवेश किया, उसने नल में प्रवेश करके और दूसरे रूप से पुष्कर के समीप जाकर उस को यह कहा, चल नल के साथ द्यूत कर, मुझ सहित आप द्यूत में नल को जीतो, राज्य को और नल को जीत कर निषधदेशों को प्राप्त कर, कलि से इस प्रकार कहा हुआ पुष्कर नल के पास गया, और कलि भी श्रेष्ठ पाशे होकर पुष्कर के पास गया, फिर शत्रु के मारने वाले भ्राता पुष्कर ने वीर नल को पाकर वारंवार कहा कि मुख्य पाशों से खेलें, उस के पीछे बड़े मन वाले राजा ने देखती दमयंती के समीप आह्वान को नहीं सहा, तब कलि से आविष्ट नलने हिरण्य नाम सुवर्ण और रथादि वाहन और वस्त्रों के समूह को हारा, सुहृदों में कोई पुरुष उस पाशों के मद से मतवाले खेलते अरिंदम नल के निवारण में समर्थ नहीं हुआ, हे भरतवंशी उस के पीछे सब पुरवासी जन मंत्रियों के साथ उस आतुर राजा के देखने और निवारण करने को आये, उसके पीछे सूतने पास आकर दमयंती से निवेदन किया हे देवी यह कार्यवान पौरजन द्वारपर

स्थित है राजा नल से निवेदन कीजिये, राजा के व्यसन को न सहने वाले और धर्म अर्थ के दिखाने वाले सब प्रकृति जन स्थित हैं, उस के पीछे अश्रु से व्याकुल नयन और दुख से कर्षित और शोक से उपहतचित्त दमयंती नल को बोली, हे राजन् राजभक्ति को आगे करने वाले पौरजन सब मंत्रियों के साथ आप के दर्शनाकांक्षी द्वार पर स्थित हैं, उन के देखने योग्य हो इस प्रकार वारंवार कहा, उस प्रकार बिलाप करती उस रुचिरांगी को कलि से आविष्ट राजा नल कुछ नहीं बोला, उसके पीछे वे सब मंत्री और पुरवासी दुख से पीड़ित और लज्जित यह नहीं है अर्थात नष्ट हुआ यह कहते अपने स्थान को गये, हे युधिष्ठिर उस प्रकार पुष्कर और नल का यह द्यूत बहुत महीनों तक हुआ फिर पवित्र यश वाला नल हारा॥

अष्टमोऽध्यायसमाप्तः

नवमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले हे राजन् उस के पीछे सावधान दमयन्ती उस पवित्र यश वाले और खेलने से मूढ़ राजा को उन्मत्त की समान देखकर, फिर भय शोक से भरी हुई भीम की पुत्री ने राजा के विषय उस बहुत बड़े कार्य को बिचार किया, वह उस पापी को

शंका करती और उस राजा के प्रिय को करना चाहती सब धन हारे हुए नल को जानकर, उसे बड़ी यश वान हितकारी सब अर्थ में कुशल अनुरक्त सुभाषणी परिचारिका बृहतसेना नाम धात्री को यह बोली, हे बृहत्सेना; जाओ और नल की आज्ञा से अमात्यों को बुलाकर कहो जो द्यूत में हारा और जो धन शेष से उस के पीछे वे सब मन्त्री नल की आज्ञा को जानकर और हमारा भी भाग धेयहो यह कहकर नल के पास गये, दमयन्ती ने निवेदन किया कि हे तात सब प्रकृति जन दूसरी बार उपस्थित हुए, उसने अंगीकार नहीं किया, वचन को अंगीकार न करने वाले भर्त्ता को देखकर वह लज्जित दमयन्ती फिर भवन में प्रवेश हुई, वह दमयन्ती पवित्र यश वाले नल से पाशों को निरन्तर विमुख और नल को सब धन को हारने वाला सुनकर फिर धात्री को बोली, हे कल्याणी बृहत्सेना फिर जाओ, और नल की आज्ञा से सूत वार्ष्णेय को लाओ बड़ा कार्य उपस्थित हुआ, उस बृहत्सेना ने दमयन्ती के वचन को सुनकर आप्त का ही पुरुषों के द्वारा वार्ष्णेय को बुलाया, उस के पीछे अनिंदिता और देश काल को जानने वाली दमयन्ती शुद्ध और मधुर वाणी से वार्ष्णेय को सांतवन करती समय के योग्य वह बोली, तू जानता है जिस प्रकार राजा तुम में अच्छी प्रीति रखता है तू उस विपमस्थ की सहायता करने को योग्य है, राजा जैसे २ पुष्कर

से हारता है उसी २ प्रकार इस की प्रीति द्यूत में फिर बढ़ती है, तथा पुष्कर के पांशे उस के इच्छा के अनुसार पड़ते हैं तथा नल के पाशों में वीर्य यही रखता है, और वह सुहृद और सज्जनों के ठीक वचनों को नहीं सुनता है तथा मोहित हुआ वह तेरे बचनों को भी अंगीकार नहीं करता, मैं मानती हूं कि निश्चय महात्मा नल का दोष नहीं है जो मोहित हुआ, राजा मेरे बचनों को अंगीकार नहीं करता है, हे सारथी मैं तेरी शरण प्राप्त हूं मेरे बचनों को कर, मेरे चित्त का आशय शुद्ध नहीं होता है, कभी नल नाश को भी पावे, नल के प्रिय और मन के तुल्य वेग वाले घोड़ों को जोड़कर इस मिथुन (पुत्र पुत्री) को रथ में बिठलाकर कुंडलपुर जाने के योग्य है, इन दोनों कुमार कुमारी तथा रथ और इन घोड़ों को मेरे ज्ञाति जनों में छोड़कर इच्छा के अनुसार बास करो, अथवा दूसरी जगह जाओ नल के सारथी वार्ष्णेय ने दमयन्ती के उस वाक्य को सुनकर सम्पूर्ण वृत्तान्त नल के मुख्य अमात्यों से निवेदन किया, हे राजन वह उन मंत्रियों के साथ मिलकर और विशेष निश्चय करके आज्ञा पाया हुआ दोनों कुमार कुमारियों को बिठलाकर उस घोड़ों के रथ द्वारा विदर्भ देशों को गया, वह सूत वहां घोड़ों को और उस रथ श्रेष्ठ को तथा उस इन्द्रसेना नाम कन्या और इन्द्रसेन नाम बालक को वहां छोड़कर, राजा भीम को पूछकर तब

उस के पीछे राजा नल को शोचता पीड़ा मान और खेलनार्थी घूमता अयोध्या नगरी को गया, वह अति दुखी राजा ऋतुपर्ण के समीप स्थित हुआ और उस राजा के सारथ्य से वेतन को प्राप्त किया ॥

नमोऽध्यायसमाप्तः

दशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले उस के पीछे वार्ष्णेय के चले जाने पर खेलने वाले नल का राज्य और जो दूसरा कुछ धन था पुष्कर ने हरन किया, हे राजन हंसता हुआ पुष्कर उस नल को जिस का राज दूरगया बोला फिर द्यूत प्रवृत करो पण में लगाने के योग्य आपका द्रव्य कौन है, आप की एक दमयन्ती शेष है दूसरा सब धन मैंने जीता, दमयन्ती का पण करो जो अच्छा मानते हो, पुष्कर से इस कहे हुए पवित्र यश वाले नल का हृदय क्रोध से मानो फट गया और दमयन्ती को कुछ नहीं बोला, उस के पीछे बड़ा क्रुद्ध महा यशवान नल पुष्कर को देखकर और सब अंगों से भूषणों को उतार कर, एक वस्त्र से अच्छादित्त सुहृदों को शोक का बढ़ाने वाला राजा बड़ी लक्ष्मी को छोड़कर वहां से निकला, फिर एक वस्त्र धारी दमयन्ती उस चलते के पीछे चली वह नल उस के

साथ नगर से बाहर तीन रात बसा, हे महाराज फिर पुष्कर ने पुर में प्रसिद्ध कराया कि जो पुरुष नल के पास भले प्रकार स्थित होवे वह मेरे हाथ से वध्यता को पावे, हे युधिष्ठिर पुरवासियों ने उस पुष्कर के वाक्य और उस नल के विद्वेषण से उस का सत्कार नहीं किया, उस प्रकार वह सत्कार के योग्य असत्कृत राजा नल मात्र से निर्वाह करता नगर के समीप तीन रात बसा, उस के पीछें वहां भूख से पीड़ामान और फल मूलों को चुनता राजा चल दिया और दमयन्ती उस के पीछे चली, फिर भूख से पीड़ामान नल ने बहुत दिनों के पीछें सुनहरी पक्ष वाले पक्षियों को देखा, तब उस बली राजा निषध ने चिन्ता की कि अब यह मेरा भक्ष्य है और यही धन होगा, उस के पीछे उसने अपने दुपट्टे से उन को ढाक दिया वे सब उस के वस्त्र को लेकर आकाश मार्ग से गये, उस के पीछे उड़ते हुए पक्षियों ने उस दिगम्बर हीन और अधोमुख भूमि पर स्थित नल को देखकर यह वचन कहा, हे दुर्बुद्धि! तेरा वस्त्र हरने के इच्छामान् हम पाशे आये तुम वस्त्र सहित के जाने में हमारी कुशलाता नहीं, हे राजन् तब पवित्र यश वाले नल उस के समीप आये, पाशों और वस्त्र हीन आप को देखकर फिर दमयंती को बोला, हे अनिंदिते मैं जिन्हों के अति कोप से ऐश्वर्य से च्युत हुआ क्षुधा से युक्त और दुख में प्राण यात्रा (आजीविका) को

नहीं पाता हूं, और जिस के कारण से निषध निवासियों ने मेरा सत्कार नहीं किया हे भीरुवे! ये पक्षी होकर मेरे वस्त्र को हरते हैं, मैं तेरा भर्त्ता दुखी गत चेतन बड़ी २ विषमता को प्राप्त हुआ अपने हितकारी इस वचन को सुन, यह बहुत मार्ग तीक्षिण पथ अवंति और ऋक्षवंत पर्वत को उलंघन कर जाते हैं, यह बड़ा पहाड़ विंध्य है और समुद्र में मिलने वाली पयोष्णी नदी है और महर्षियों के आश्रम बहुत मूल फल से युक्त हैं, यह मार्ग विदर्भ देशों का है यह कोश को जाता है इस से परे दक्षिण में यह दक्षिण देश है, हे भरतवंशी! सावधान और पीड़ामान राजा नल ने दमयन्ती को संबोधन करके वारंवार यह वचन कहा, उस के पीछे वह दुख से कंपित दमयन्ती वष्पाकुल वचन के साथ उस नल को दीन वचन बोली, हे राजन् वारंवार मुझ से आपके संकल्प को शोचने वाली का हृदय उद्वेग को पाता है और सब अंग अचल होते हैं, मैं क्षुधा श्रम से युक्त वस्त्र हीन तुम को जिस का राज्य और द्रव्य हरी गई, निर्जन वन में छोड़कर कैसे चली जाऊं, हे महाराज! मैं घोर वन में उस राज्य सुख को शोचने वाले शान्त क्षुधा से पीडित के श्रम को नाश करूंगी, सब दुखों में भार्या के समान कुछ औषध नहीं है यह वैद्यों का मत है यह तुम से सत्य कहती हूं नल बोला हे सुमध्यमे दमयन्ती यह इसी प्रकार है जैसा तुम ने कहा

पीड़ित मनुष्य का मित्र और औषध भार्या के समान नहीं है; मैं तुम को छोड़ने का इच्छामान नहीं, हे भीरु अत्यंत क्या कहती है, हे अनिंदिते मैं शरीर को त्यागूं परन्तु तुझ को नहीं त्यागूं, दमयंती बोली हे महाराज जो तुम मुझ को छोड़ना नहीं चाहते तो किस लिये विदर्भ देशों के मार्ग को दिखलाते हो, हे नृपति मैं तुम्हारी शरण हूं मुझे त्यागने को योग्य नहीं हो हे महीपति? कलि से कर्षित चित्त द्वारा मुझ को मत त्यागो, हे नरोत्तम? तुम निरंतर मार्ग बताते हो, हे अमरोपम इस कारण से मेरे शोक को बढ़ाते हो, जो आपका यह अभिप्राय है कि ज्ञाति वालों के पास जावै तो दोनों साथ विदर्भ देशों को चलेंगे जो तुम मानते हो, हे मानंद वहां राजा विदर्भ तुम को पूजेगा हे राजन उस से पूजित तुम सुख पूर्वक गृह में बास नहीं करोगे ॥

दशमोऽध्यायस्समाप्तः

ग्यारमोऽध्यायारंभः

नल बोला जिस प्रकार तेरे पिता का राज्य है उसी प्रकार मेरा है इस में संशय नहीं परन्तु विषमरथ मैं किसी प्रकार वहां नहीं जाऊंगा, मैं तेरे हर्ष का बढ़ाने वाला ऐश्वार्य बान जाकर फिर

ऐश्वर्य से च्युत तेरे शोक का बढ़ाने वाला कैसे जाऊंगा, वृहदश्व बोले इस प्रकार वारंवार कहते राजा नल ने अर्द्ध वस्त्र से संवीत यहां वहां घूमने वाले भूख प्यास से परिश्रांत किसी सभा में पहुंचे, तब निषध देशों का राजा नल उस सभा को पाकर दमयंती के साथ पृथ्वी तल पर बैठ गया, वह वस्त्र हीन तृणासन से रहित धूल से गुंठित मालिन नल दमयन्ती के साथ श्रांत पृथ्वी तल पर सो गया, उस के पीछे अति कोमल अंग तपस्विनी कल्याणी दमयंती भी अकस्मात दुख को पाकर निद्रा से हरण कीगई, अर्थात सो गई, हे राजन् दमयंती के सो जाने पर शोक से मथितचित्त राजा नल पहिले की समान नहीं सोया, उस में उस राज्य हरण और सब प्रकार से सुहृदों का त्याग और वनमें कालि से वस्त्र हरण आदि क्लेश को बिचारकर चिंता को पाया, इस करके मेरा क्या हो और मुझे न करने वाले का क्या हो, क्या मेरा मरण श्रेष्ट है वा जन (भार्या) का त्याग उचित है, निश्चय यह मेरी अनुरक्त भार्या मेरे कारण से इस प्रकार दुख को पाती है फिर मुझ से विहीन यह कभी स्वजन (माता पिता) के पास चली जावै, यह अनुवृता मेरे पास दुख को पावैगी इस में संशय नहीं और त्याग में संशय हो कहीं सुख को भी पावै, हे नराधिप हे राजन्, उस नल ने बहुत प्रकार से निश्चय करके और बार बार बिचार कर दमयंती

के त्याग को श्रेष्ठ माना, वह अपने तेज से मार्ग में किसी से वर्षणा करने को योग्य नहीं क्योंकि यह यशस्विनी महा भागा पतिवृता मेरी भक्त है; तब उस की बुद्धि दमयंती के विषय निवृत्त हुई, और दुष्टभाव कलि के द्वारा दमयंती के त्याग में वर्त्तमान हुई उस राजाने अपनी अवस्नता को और उसकी भी एक वस्नता को चिंता करके अर्द्ध वस्त्रके काटने को चाहा, किस प्रकार वस्त्र को काटूं, और मेरी प्रिया नही जागै, तब राजा नल इस प्रकार विचार कर सभा के चारोंओर घूमा, हे भरतवंशी? इस के पीछे इधर उधर से चारों ओर दौड़ते नल ने सभा को किसी स्थान पर कोशरहित उत्तम खड्ग को पाया, शत्रु को तपाने बाला नल उस खड्ग से अर्द्धवस्त्र को काट कर और धारण करके अचेत सोई हुई दमयंती को छोड़कर शीघ्र चला, तब उस के निवृत हृदय नल ने फिर सभा में आकर और दमयंती को देखकर रुदन किया, पूर्व काल में जिसे मेरी प्रिया को न वायु देखते थे न सूर्य वह यह अब अनाथ की समान सभा के मध्य भूमिपर सोती है, यह चारु हासिनी वरारोहा कटे हुए वस्त्र से संबीत उन्मत्त की समान जागर कैसे होगी, यह सतीशुभा दमयन्ती मुझ निरदित अकेली इस मृग व्याघ्र से सेवित घोर बन में कैसे बिचरैगी, हे महाभागे द्वादश सूर्य अष्ट वसु एकादशरुद्र और दोनों अश्विनी कुमार मरुतगणों के साथ तुम को रक्षा

करें तू धर्म से युक्त है कलि से अपहृत ज्ञान और उद्यत नल उस भूमिपर रूप में अप्रतिम प्रिय (भार्या) को इस प्रकार कहकर चल दिया, राजा नल कलि से कर्षित जाजाकर प्रीति से आकर्षण होने पर फिर वारंवार सभा में आता था, तब उस दुखी का हृदय दो प्रकार का हुआ हौला के समान वारंबार सभा में आता था और जाता था, कलि से कर्षित और मोहित नल बहुत करुणा विलाप करके और उस सोती हुई भार्या को छोड़कर शीघ्र चला, कलि से स्पर्श किया हुआ नष्ट बुद्धि और दुखी राजा नल उस बात को विचारता अकेला भार्या को शून्य वन में छोड़कर चल दिया ॥

एकादशमोऽध्यायस्समाप्तः

द्वादशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले हे राजन नल के दूर चले जाने पर गत श्रमा वरारोहा दमयन्ती निर्जन वन में भय युक्त जागपड़ी, शोक युक्त दुख से भयभीत दमयन्ती भर्ता नल को न देखती ऊंचेस्वर से पुकारी हे महाराज हा रथी हा महाराज हा स्वामी मुझ को क्यों त्याग ते हो हा? मारी गई नष्ट हुई और निर्जन वन में भयभीत हूं हे महाराज विख्यात है कि निश्चय तुम धर्मज्ञ और सत्यवादी हो उस प्रकार सत्य कहकर

अर्थात स्वयंवर में यह प्रतिज्ञा करके कि तुम को नहीं त्यागूंगा फिर बन में छोड़कर कैसे चले गये; शत्रु की ओर से अपकार होने पर विशेषकर मेरे अपकार के न होने से मुझ दक्ष अनुवृत भार्या को छोड़कर कैसे गये हो, हे नरेश्वर मेरे साथ वे बचन भले प्रकार करने को समर्थ हो जोकि पूर्व काल में उन लोक पालों के समीप कहे गये, जिस स्थान पर आप की त्यागी हुई कान्ता एक मुहूर्त भी जीविती है, हे पुरुषोत्तम यहां कारण यह है कि बिना काल मनुष्यों की मृत्यु नहीं रची गई, हे पुरुषोत्तम यह इतना ही परिहास यथेष्ट है हे दुर्धर्ष मैं अति डरती हूं हे ईश्वर अपना दर्शन दो हे राजन दीखते हो हे निषध के स्वामी यह दीखे हो गुल्मों से शरीर से शरीर को छिपाकर मुझ से क्यों नहीं बोलते हो, हे राजेंद्र दुख की बात और निर्णय पण है जो इस अवस्था वाली, और विलाप करती मुझ को मिलकर आश्वास नहीं करते हो, मैं आप को और दूसरी कुछ बात को नहीं शोचती हूं हे राजन तुम अकेले कैसे होगे यह शोचती हूं, हे राजन प्यासे सूखे और श्रम से कर्षित तुम सायंकाल में वृक्षों की मूल पर मुझ को न देखते किस प्रकार होगे; उस के पीछे वह अत्यंत शोक से पीड़ित और शोक से प्रदीप्त दुखी रोती इधर उधर चारों ओर दौड़ी, वह विह्वला और भय युक्त बाला बारंबार उठती थी और बारंबार गिरती थी और बारंबार

छिपती थी, और बारंबार पुकार पुकारती और रोती थी, इस के पीछे पतिवृता शोक से अत्यंत दुखी विह्वला दमयंती बारंबार स्वास लेकर रोती हुई बोली, जिस के पीछे शाप द्वारा दुख से पीड़ित नल दुख को पाता है उस प्राणी को हमारे दुख से भी अधिक दुख होवे, जिस पापी ने प प से शून्य मन नल को इस अवस्था वाला किया उससे अधिक दुख पाकर दुख की जीविका से जीवो, इस प्रकार महात्मा राजा की भार्या विलाप करती और स्वपद से सेवित बन में भर्ता को ढूंढती, दमयंती उन्मत्त के समान पुकारती बहुत शोचती बारंबार विलाप करती इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ने वाली हुई, उस अत्यंत रोती और कुररी पक्षी की समान पुकारती, बहुत शोचती बारंबार विलाप करती, अकस्मात आई हुई और समीप वर्त्तमान दमयंती को अजगर की तुल्य बड़े शरीर वाले क्षुधा युक्त सर्प ने पकड़ लिया, वहां सर्प से निगली हुई और शोक से डूबी उस प्रकार आप को नही शोचती थी जिस प्रकार नल को शोचती थी, हा नाथ! यही निर्जन वन में अनाथ के समान मुझ सर्प से ग्रसी हुई के पीछे किस लिये नहीं दौड़ते हो, हे निषध के स्वामी पापों से युक्त तुम फिर मन बुद्धि और धनों को प्राप्तकर और मुझ को स्मरण कर के फिर कैसे जीवोगे, हे प्रभु! अब आप मुझ को बन में छोड़कर कैसे चलेगये हे निष्पाप नृपोत्तम तुम

श्रांत और क्षुधा से-पीड़ित-परिस्मान्त के श्रम-को कौन नाश करैगा, उस-के पीछे कोई-मृगों का व्याध गहन बन में घूमता-उस रोती पुकारती को सुनकर वेगसे पास आया, उस प्रकार सर्प से ग्रस्त दीर्घनेत्रा-दमयंती को देखकर शीघ्रता करने मृग व्याध ने वेगसे पास आकर, तीक्ष्ण धार शस्त्र द्वारा मुख से चीर-डाला मृग जीवन ने उस निर्विचेष्ट सर्प को चीरकर, फिर उस व्याध ने उस को छुड़ाकर जल से प्रक्षालन कर और आश्वासन करके फिर उस आहार करने वाली को पूछा, हे मृग शावाक्षी तुम किस की हो और किस प्रकार बन को आई हे भाविनी किस प्रकार इन बड़े कष्ट को पाया है, हे भरतवंशी राजा युधिष्ठिर उस प्रकार उस से पूछी हुई दमयंती ने यह सब जैसा वृत्तान्त था इस से कहा, वह मृग व्याध उस अर्द्ध वस्त्र संवीत पुष्टि श्रेणि पयोधरवाली कोमल शरीर निर्दोष अंग पूर्णचन्द्रमा की तुल्य मुख, कुटिल वा शोभायमान पक्ष्मा और नयन वाली तथा मधुर भाषिणी दमयंती को देखकर काम के वश प्राप्त हुआ, उस काम से पीडित लुब्धकने मृदु पूर्वक लक्षण बचन के साथ उस को सांत्वन किया उस भाविनी ने उस को जाना, पतिव्रता दमयन्ती भी उस दुष्ट को जानकर तीव्र रोष से, प्राविष्ट और क्रोध से प्रज्वलित हुई, फिर उस पापमति नीच आतुर ने उस दुर्धर्ष और दीप्त अग्नि शिखा की तुल्य दमयंती के धर्षण को विचारा, फिर पति और राज से रहित दुख से पी-

डित क्रोध से युक्त दमयंती ने बचन मार्ग के बंद होने पर अर्थात् बचन से निवार्ण न होने पर इस को शाप दिया, जो मैं मन से भी नल के सिवाय दूसरे पुरुष को स्मरण नहीं करती हूं उसी प्रकार यह नीच मृगजीवन प्राणों से रहित गिरपड़े, उस प्रकार बचन के कहते ही वह मृगजीवन पुरुष निर्जीव भूमि पर गिर पड़ा जिस प्रकार अग्नि से दग्ध वृक्ष ॥

द्वादशमोऽध्यायः समाप्तः

त्रयोदशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले वह कमल लोचन दमयन्ती मृग व्याध को मार कर बन को चली जोकि भीषण शून्य और झिल्ली के गण से नादित, सिंह हाथी रुरु व्याघ्र भैंसा रीछों के गणों से युक्त बहुत प्रकार के पक्षी गणों से आकीर्ण म्लेच्छ और चोरों से सेवित, शाल, वेणु, धव, पीपर, तिंदुक, इंगुद, किंशुक, अर्जुन, अरिष्ट, स्यंदन, औशाल्मक नाम वृक्षों से ढका हुआ, जंबु, आम्र, लोध, खदिर, सात, और वेत्र जाम वृक्षों से समाकुल और पद्मक आमलक, प्लक्ष, कदंब, उंदुबर नाम वृक्षों से आवृत, बहरी, बिल्व से ढका हुआ वंगेद प्रियाल, ताल, खजूर, हरीतकी और विभीतक नाम वृक्षों से समाकुल था, उस दमयन्ती ने नाना प्रकार

की सैकड़ों धातुओं से सजे हुए नाना प्रकार के पर्वतों को और चारों ओर से शब्दित निकुंजों को और अद्भुत दर्शन गुफाओं को नदी, सरोवर, बावड़ी, और नाना प्रकार के मृग पक्षियों को, और भयानक रूप अद्भुत पिशाच उरग राक्षसों को, पल्वल तडाग और पहाड़ों की सब शिखरों की नदी और अद्भुत दर्शन झिरना-ओं को देखा, वहां भीम नंदनी ने भैंसा, वराह, रीछ और वन सर्पों के झुंडको देखा तब तेज यश शोभा बड़े धैर्य से युक्त दमयन्ती नल को ढूढ़ती अकेली बिचरती थी, इस के पीछे वहां वह राज पुत्री दमयन्ती भर्ता के दुख से पीड़ित दारुण मार्ग, को पाकर किसी से नहीं डरी, हे राजन् इस के पीछे अति दुखी और भरता शोक में व्याप्त अंग शिलातल पर बैठी हुई दमयन्ती ने विलाप किया, दमयन्ती बोली हे व्यूढ़ोरस्क महा बाहु निषध देशों के स्वामी अब तुम मुझ को निर्जन बन में छोड़कर कहां गये हो, हे बीर नरोत्तम बड़ी दक्षिणा वाले अश्वमेध आदि यज्ञों में पूजन करके कैसे मेरे साथ रूष बरताव करते हो, हे बड़े तेजस्वी नरोत्तम राजाओं में श्रेष्ठ तुम नें मेरे समीप जो कहा उस बचन के स्मरण करने को योग्य हो, हे राजन् आकाश गामी हंसों ने आप के समीप जो कहा मेरे सामने जो कहा उसी के बिचार ने को योग्य हो, हे पुरषोत्तम निश्चय भले प्रकार पढ़े हुए चारों वेद अंग उप अंग बिस्तार सहित एक ओर और सत्य एक

और अर्थात दोनों एक समान हैं, हे शत्रु नाशक नरेश्वर वीर, उस करुणा से उस के सत्य करने को योग्य हो जो बचन पूर्व काल में मेरे समीप कहा है, हा ! वीर निष्पाप राजा नल प्रत्यक्ष है, कि मैं तेरे वियोग से इस घोर मार्ग में नष्ट हुई मुझ से क्यों नहीं बोलते हो, यह रौद्र खुला मुख भयानक रूप भूखा शार्दूल मुझ को भक्षण करता है क्यों मेरी रक्षा करने को योग्य नहीं हो, हे कल्याण रूप राजा नल तुमने सदा यही कहा कि तेरे सिवाय मेरी कोई प्रिया नहीं है उस पूर्व कही हुई वाणी को सत्य करो, हे नराधिप तुम मेरे ईप्सित हो फिर मुझ उन्मत्त इष्ट ईप्सित और विलाप करती [illegible] को क्यों उत्तर नहीं देते हो, हे पृथु लोचने भारि कर्णश्रम नल तुम मुझ कृश दीन विवर्ण मलिन अर्द्ध वस्त्र से ढकी अकेली और अनाथ की तुल्य विलाप करती, रोती और झुंड से रहित अकेली हरणी की तुल्य मुझ को नहीं मानते हो, हे महाराज मैं सती दमयन्ती महावन के बीच अकेली तुम को बोलती हूं मुझ को क्यों उत्तर नहीं देते, हे कुल शील से युक्त सुन्दर सब अंग शोभन नरोत्तम अब मैं इस पर्वत में तुझ को नहीं देखती हूं, इस महाघोर सिंह व्याघ्रों से सेवित वन में सोते बैठे वा स्थित को किस से पूछूं, हे नरश्रेष्ठ निषधदेश के स्वामी दुख से पीडित और तेरे अर्थ शोक से कर्षित मैं, तुम मेरे शोक नशाने वाले प्रस्थित को किस से

पूछूं कि इस बन में तुम ने मिलकर राजा नल देखा और इस बन में चले जाने वाले नल को कौन पूछने योग्य है, अब मैं किस की मधुरवाणी से सुनूंगी कि जिस महात्मा शत्रु सेना के मारने वाले कमल लोचन राजा नल को ढूढ़ती है वह यह है, यह श्रीमान और डाढ़ और बड़ी हनु रखने वाला बन का राजा शार्दूल सन्मुख आता है, अशंकित मैं इस के पास जाती हूं आप मृगों के राजा हैं और तुम इस बनों में प्रभु हो, मुझ को विदर्भ राजा की पुत्री दमयंती नाम और शत्रु के मारने वाले नल राजा की निषध की भार्या जानो, हे मृगेन्द्र जो यहां तुमने नल देखा तो मुझ अकेली दुखी शोक कर्षित और पति ढूढ़ने वाली को आश्वासन करो, हे बन के स्वामी मृगों में श्रेष्ठ अथवा जो तुम नल को नहीं कहते हो, तो मुझ को खाओ और सब दुख से छुटाओ, बन में बिलाप करनेवाली मुझको सुनकर यह आश्वासन नहीं करता है इस स्वादु जल वाली और सागर में मिलने वाली नदी के पास जाऊं, प्रकाशमान बहुत वर्ण वाली मनोरम ऊंची बहुत शिखरों से युक्त इस पर्वत को; जो कि नाना प्रकार की धातुओं से भरा हुआ नाना प्रकार के पाषाणों से भूषित और इस महाबन की ध्वजा रूप ऊंचा, सिंह, शार्दूल, हाथी, बराह, रीछ, और मृगों से युक्त और चारो ओर बहुत प्रकार के पक्षियों से अनुनादित सुंदर पुष्प वाले किंशुक, अशोक, बकुल, पुंनाग कर्णकार

थत्र, और प्लक्ष, नाम वृक्षों से उपशोभित, पक्षी युक्त नदियों और शिखरों से व्याप्त है तब तक इस गिरिराज को नल के विषय पूछती हूं, हे! भगवन् पर्वतों में श्रेष्ठ हे दिव्य दर्शन विख्यात हे शरण्य बहु कल्याण पर्वत तुम को नमस्कार हो, मैं पास आकर तुम को प्रणाम करती हूं मुझ को राजा पुत्री राजा की पुत्र वधू और राजा की भार्या दमयंती नाम से विख्यात जानो, मेरा पिता राजा भीम नाम महारथी विदर्भ देशों का स्वामी और चारों वर्णों का रक्षक है, बड़े सुंदर और कमल नेत्र वाला राजाओं में श्रेष्ठ दक्षिणा युक्त राजसूय अश्वमेध यज्ञों का करने वाला, ब्रह्म ब्राह्मण जाति वेद वैद्य कर्म वा परमात्मा में भक्ति रखने वाला साधुओं का चलन रखने वाला सत्य वाक्य दूसरे के गुणों में दोष न लगाने वाला शील वान पराक्रमी बड़ा लक्ष्मीवान सर्वज्ञ पवित्र, विदर्भ देशों की भले प्रकार रक्षा करने वाला और शत्रु समूह का जीतने वाला प्रभु है, हे भगवन् अपने समीपस्थित मुझ को उस की पुत्री जानो, और नरों में उत्तम महाराजा वीरसेन नाम से विख्यात मेरा श्वशुर निषध देशों में है, उस राजा का पुत्र वीर श्रीमान सत्य पराक्रम है जोकि क्रम से प्राप्त पिता के राज्य धन को शासना करता है, वह शत्रु का मारने वाला बोलने में चतुर पवित्र कर्मा यज्ञ में अमृत का पान करनेवाला और अभिमान है, यज्ञ करता दान देने वाला युद्ध

करने वाला और भले प्रकार प्रजा शासन करने वाला है यहां आई हुई मुझ अबला को उस की श्रेष्ठ भार्या जानो, हे पर्वत सत्य तुम मुझ को लक्ष्मी रहित भर्त्ता दीन अनाथ व्यसन से युक्त और भर्त्ता के ढूढ़ने वाली जानो, हे पर्वतों में श्रेष्ठ तुमने आकाश को युक्त स्पर्श करने वाली इन सैकरों शिखरों के द्वारा इस दारुण बन में राजा नल भी देखा, मेरा भर्त्ता गजेंद्र के तुल्य चलने वाला बुद्धिमान दीर्घ बाहु क्रोधी विक्रान्त बलवान और बड़े यश वाला है, निषध देशों का राजा नल कहीं तुमने देखा, हे पर्वत श्रेष्ठ अब मुझ अकेली विलाप करती विह्वल दुखी को अपनी पुत्री की वाणी से आश्वान क्यों नहीं करते हो! हे! वीर विक्रांत धर्मज्ञ सत्य प्रतिज्ञ, राजा नल जो तुम इस बन में हो तो आप अपना दर्शन दो मैं कब महात्मा राजा निषध की कही हुई स्निग्ध गंभीर शब्द बादल की तुल्य और अमृत की उपमा रखने वाली शुभ उस वाणी को सुनूंगी कि हे विदर्भ की पुत्री, जो कि सत्य अदीन और मेरे शोक को नाश करने वाली है हे धर्म वत्सल राजन् मुझ डरी हुई को आश्वासन करो, उस के पीछे वह पार्थिवनन्दनी दमयंती उस गिरि श्रेष्ठ को यह कहकर फिर उत्तर दिशा को गई, उस पद्माङ्गना ने तीन दिन रात चलकर तपस्वियों का बड़ा बन देखा जो कि दिव्य काननों से शोभित था, तथा वशिष्ठ, भृगु अत्रि, ऋषियों के समान

जितेन्द्री जिताहार हग शौच से युक्त; जल वायु भक्षी पत्तों का आहार करने वाले वल्कल और मृग चर्मधारी मुनि जितेंद्री तपस्वियों से उपशोभित था तपस्वियों का वास स्थान और रम्य आश्रम मंडल को देखा, उसने, नाना प्रकार के मृग समूहों से सेवितशाखा मृग के गणों युक्त तापसों संयुक्त; आश्रम को देखकर आश्वासन को पाया, वह शुभ्र, सुकेशी; सुकुचा, सुन्दर दंत और सुखवाली तेजस्विनी सु जंघना, सुंदर काले और बड़े नेत्र वाली, नल की प्रिया महाभाग तपस्विनी स्त्री नल दमयन्ती प्रधान आश्रम में प्रवेश हुई, वह तप से वृद्ध ऋषिओं को दंडवत करके विनय से नम्र खड़ी हुई वह उन सब तपस्वियों से यह कही गई तेरा आना शुभ हो; वहां तपोधन ऋषि न्याय के अनुसार इस की पूजा को करके फिर यह बोले कि बैठो, और कहो हम तेरा क्या करें वह वरारोहा उनको बोली कि हे निष्पाप महा भागो यहां तप में अग्निओं में धर्मों में मृग पक्षियों में और सुधर्म आचरणों में पट ऐश्वर्य के स्वामी आप लोगों की कुशलता है वह उन से कही गई, हे भद्रे यश-स्विनी सब जगह हमारी कुशल है, हे निर्दोष सब अंग तू कौन है और क्या करना चाहती है, यहां तेरे श्रेष्ठ रूप और परम कांति को देखकर, हम को आश्चर्य उत्पन्न हुआ सावधान हो सोच मत कर, हे कल्याणी आश्चर्य कि तू इस वन वा इस पहाड़

अथवा इस नदी की देवी है हे अनिंदिते सत्य कहो वह उन ऋषियों को बोली हे ब्राह्मणो मैं इस वन की देवता नहीं हूं, और इस पहाड़ वा नदी की भी देवता नहीं हूं तुम सब तपोधनो मुझ को मानुषी जानो, विस्तार सहित कहूंगी वह सब मुझ से सुनो - विदर्भ देशों में भीम नाम राजा पृथ्वी का पालन करनेवाला है. हे द्विज सत्तमो तुम सब मुझ को उसकी पुत्री जानो निषध देशों का स्वामी बुद्धिमान बड़ा यशमान नल नाम, वीर विद्वान् संग्राम को जय करने वाला राजा मेरा भर्त्ता है जोकि देवपूजन में तत्पर और द्विजात जन वत्सल, निषध वंशका रक्षक महा तेजस्वी महाबली सत्यवान धर्मज्ञ बड़ा ज्ञानी सत्य प्रतिज्ञ शत्रु को मर्दन करने वाला, ब्रह्ममय ईश्वर का उपासक श्रीमान् शत्रुओं के पुरको जय करने वाला, राजाओं में श्रेष्ठ देवराज के समान तेजस्वी विशालाक्ष पूर्ण चंद्रमा के समान मुखवाला शत्रु नाशक नल नाम मेरा भर्त्ता, मुख्य यज्ञों का करने वाला वेद और वेदांग के पार पहुंचने वाला सूर्य चंद्रमा की समान प्रभावान युद्ध में शत्रुओं को मारने वाला है, वह सत्य धर्म परायण राजा कोई छल बुद्धि नीच अशुद्ध अंतःकरण पुरुषों से बुलाकर, द्यूत खेलने में कुशल कुटिल मनुष्यों से राज और सब धन हरागया मुझ को उस राज ऋषि की भार्या जानो, निश्चय मुझ दुखी भर्त्ता के दर्शन की इच्छामात्र दमयंती नाम से

विख्यात को जानो, वह दुख से शिखरों और पहाड़ों नदियों सरोवरों, पल्लवों तथा सब वनों में रणविशारद महात्मा अस्त्रज्ञ नल भर्त्ता को ढूंढ़ती घूमती हूं कहीं भगवंत ऋषिओं के इस तपोवन में निषधों का राजा नल नाम प्राप्त होवे, हे ब्राह्मण मैं जिस के कारण से इस अति दारुण, भयानक और शार्दूल मृगों से सेवित वन को प्राप्त हुई, जो मैं कई दिन रात में राजा नल को नहीं देखूंगी तो मैं इस देह के त्याग से आप को मोक्ष से युक्त करूंगी अर्थात योगानल से देह को त्याग कर मोक्ष को पाऊंगी उस पुरुषोत्तम के बिना जीवन से मेरा क्या प्रयोजन, अब भर्त्ता के शोक से पीड़ित मैं कैसे जीवूंगी, इस के पीछे वे सत्यदर्शी तपस्वी उस प्रकार वन में विलाप करने वाली भीम नंदनी दमयंती को बोले, हे कल्याणी हे शुभे तेरे अगले दिन अच्छे होंगे हम तप के द्वारा देखते हैं तू नल को देखैगी, हे भीम की पुत्री तू निषधदेशों के स्वामी शत्रु के गिराने वाले धर्म धारियों में श्रेष्ठ जल्दी राजा नल को देखैगी, हे कल्याणी सब पापों से मुक्त सब रत्नों से युक्त और उसी श्रेष्ठ नगर में शासना करने वाले अरिंदम, शत्रुओं के भय कर्त्ता मित्रों के शोक नाशक कल्याणाभिजन राजा, पति अपने को देखैगी, इस प्रकार उस राजपुत्री नल की प्रिय पटरानी को कहकर वे सब तपस्वी अग्नि होत्र और आसनों के साथ अंतरध्यान होगये, तब वह

निर्दोष अंग राजा वीरसेन की पुत्र वधू दमयंती उस बड़े आश्चर्य को देखकर विस्मित हुई, क्या मैंने स्वप्न देखा यहां यह कौन विधि हुई वे सब तपस्वी कहां गये और वह आश्रममंडल कहां पक्षियों से सेवित पवित्र जल वाली वह रम्य नदी कहां और वे फल पुष्प से शोभित मनोहर वृक्ष कहां, बृहदश्व जी बोले वह पवित्र मुस्कान वाली भीम की पुत्री दमयंती देर तक ध्यान करके भर्त्ता के शोक से पूर्ण दीन विवर्ण मुख हुई, इसके पीछे वह वाष्प से संदिग्ध के साथ विलाप करने लगी फिर अश्रु से पूर्ण नेत्र ने दूसरी भूमिपर जाकर और अशोक वृक्ष को देखकर, और बन में कमपुष्पित पत्रों से भूषित मनोहर पक्षियों से अनुनादित श्रेष्ठ वृक्ष अशोक के पास जाकर कहा, आश्चर्य कि इस वन के बीच श्रीमान वृक्ष फल पुष्प रूप बहुत अलंकारों से श्रीमान गिरराज की तुल्य प्रकाश करता है, हे प्रिय दर्शन अशोक मुझ को शीघ्र शोक रहित करो क्या तुमने शोक मय वाधा से ही राजानल को देखा, शत्रुहन मुझ दमयंती के प्रियपति निषधदेशों के स्वामी मेरे प्रिय नल को तुम ने देखा है, एक वस्त्र के अर्द्धसे संवीत और कोमल शरीर की त्वचा रखनेवाले व्यसन से पीड़ित और इस वन में आये हुए वीरनल को देखा है, हे अशोक वृक्ष जिस प्रकार शोक रहित मैं जाऊं उस को करो हे शोक नाशक शोक रहित अशोक वृक्ष तुम सत्य नाम होजाओ, वह भीम की

पुत्री श्रेष्ठ स्त्री पीड़ेमान इस प्रकार उस अशोक वृक्ष को प्राप्त होकर अति दारुण देश में गई, उस ने वहुत वृक्षों को तथा वहुत नदियों को और वहुत रम्य पर्वतों को वहुत मृग पक्षियों को देखा, तव उस भीम की पुत्री पतिको ढूंढ़ने वाली ने कंदराओं नितंवों और अद्भुत दर्शन नादियां को देखा, इसके पीछे पवित्र मुस्कान दमयन्ती ने मार्ग को प्राप्त होकर हाथी घोड़े और रथ से व्याप्त बड़े जन समूह को देखा, जोकि रम्य शुद्ध जल से पूर्ण शुभ शीतल जल वाली विस्तीर्ण हृदय युक्त वेतों से युक्त, क्रौंच कुरर नाम पक्षियों से घोषित चक्र वाक से राजित कूर्म ग्राह भष नाम जीवों से आकीर्ण वडे द्वीप से शोभित नदी को उतरता था, ह यह यशस्विनी वरारोहा नल की पत्नी महा जन समूह को देखते ही पास गई और पुरुषों के मध्य प्रवेश हुई, जोकि उन्मत्त रूपी शोक से पीड़ित तथा अर्द्ध वस्त्र से युक्त कृश विवर्ण मलिन और धूलि से ध्वस्तकेश थी, वहां कितने ही मनुष्य उस को देख कर डरे हुए भागे कितने हीने वड़ी चिंता को पाया, कोई वहां पर पुकारे, कोई उस को हंसने लगे दूसरों ने निन्दा की हे भरतवंशी कितनों हीने दया की और पूछा, भी हे कल्याणी तूं कौन है किस की है वनमें क्या ढूंढती है हम यहां तुमको देखकर पीड़ामान हैं क्या तू मानुषी है, हे कल्याणी सत्य कहो कि तू इस वन वा पर्वत अथवा दिशा की देवता है हम तेरी शरण को प्राप्त

हुए, हे अनिंदिते आश्चर्य कि श्रेष्ठ स्त्री तू यक्षी है या राक्षसी है सब प्रकार हमारा कल्याण कर और हम को रक्षा कर हे कल्याणी जिस प्रकार यह जन समूह यहां से सब प्रकार की कुशल वाला शीघ्र जावै उसी प्रकार करोजैसा हमारा कल्याण होवै, उस के पीछे उस जन समूह से उस प्रकार कही हुई राजकुमारी साध्वी दमयन्ती जोकि भर्त्ता के व्यसन से पीड़ित थी उन जन समूह और उस के स्वामी को और जो कोई मनुष्य युवा वृद्ध बालक और उस समूह के अगुवा थे उनको बोली, कि मुझ को राजाकी पुत्री मानुषी राजा की पुत्र वधू राजा की भार्या भर्त्ता के दर्शन की इच्छावान जानो, मेरा पिता विदर्भ का राजा है और महाभाग नल नाम राजा निषध मेरा भर्त्ता है उस अपराजित को ढूंढ़ती हूं, जो शत्रुगण को मारनेवाले मेरे प्रिय पुरुषोत्तम राजा नल को जानते हो तो शीघ्र कहो, उस जन समूह का वहां प्रभु शुचि नाम सार्थवाह उस निर्दोष अंग दमयंती को बोला हे कल्याणी मेरे बचन को सुन, हे शुचिस्मिते निश्चय मैं इस जन समूह का शासन करता सार्थ वाहक हूं हे यशस्विनी मैं नल नाम मनुष्य को नहीं देखता हूं, मैं इस अमानुष सेवित से संपूर्ण बन में हाथी भैंसा शार्दूल रीछ और मृगा को देखता हूं, महावन में सिवाय तुम्ह मानुषी को दूसरे मनुष्य को नहीं देखता हूं सो यक्षों का राजा मणि भद्र हम पर प्रसन्न हो, उस के पीछे वह दमयन्ती

सब व्यौपारियों और सार्थवाह को बोली, कि यह जन समूह कहां जावेगा यह कहने के योग्य हो, सार्थवाह बोला हे राजपुत्री यह जन समूह लाभ के अर्थ शीघ्र सत्य दर्शी सुबाहु नाम राजा चंदरी के देश को जावेगा ॥

त्रयोदशमोऽध्यायःसमाप्तः

चतुर्दशोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले तब वह पति की लालसा रखने वाली निर्दोष अंग दमयंती सार्थवाह के उस वचन को सुनकर उसी जन समूह के साथ चली, फिर बहुत तिथि वाले काल के पीछे बड़े भयानक वन में सब ओर से कल्याण रूप पद्मसौगंधिक नामक जनों से युक्त बड़े सरोवर का, व्योपारियों ने देखा जोकि रम्य बहुत घास और इंधन रखने वाला बहुत पुष्प फलों से युक्त नाना प्रकार के पक्षियों से सेवित, निर्मल और स्वाद जल से पूर्ण मनोहर अति शीतल था उन थकी सवारी वाले पुरुषों ने ठहरने के अर्थ मन किया सार्थवाह की संमति में उत्तम वन को प्रवेश हुए बड़े जन समूह ने पश्चिम संध्या को पाकर वास किया, तब इस के पीछे शब्द रहित होने से अचंचल खाती रात के समय पर थके हुए जन समूह के सोजाने पर

हाथियों का झुंड, मद के झरने व्याकुल जल पान के अर्थ पहाड़ी नदी पर आपहुंचा इस के पीछे उस झुंडने उस जन समूह को और जन समूह के मध्य बहुत हाथियों को देखा तब वे सब महोत्कर वन के हाथी उन ग्राम के हाथियों को देखकर, मारने के इच्छा वान वेग से दौड़े उन दौड़ते हुए हाथियों का वेग दुःसह हुआ जैसे पहाड़ के श्रम से पृथ्वी पर पड़े हुए शीर्ण शिखरों का हाथियों के गिरते वन के मार्ग नष्ट हुए सरोवर के मार्ग को रोककर सोए हुए और पृथ्वी तलपर चेष्टा करते उस उत्तम जन समूह को उन हाथियों ने अकस्मात मार डाला हाहाकार को छोड़ते शरणार्थी जन समूह, वन के गुल्मों की ओर दौड़ते निद्रा से अंधे हुए कितने ही हाथियों के दांतों से कोई सूंडों से कोई पावों से मारे गये तब जिनके बहुत ऊंट, और घोड़े मारे गये वे पदाति जन से युक्त, भय से दौड़ते परस्पर हतघोर शब्दों को छोड़ते पृथ्वी तलपर गिरपड़े और वे संरब्ध वृक्षों पर चढ़कर विषम स्थानों पर गिरपड़े, हे राजन दैव योग से इस प्रकार के बहुत हाथियों से दबाकर वह धन वान जन समूह से नष्ट हुआ और तीनों लोक को भय करने वाले बड़े शब्द हुए, वह कष्ट अग्नि उठी अब दौड़ो रक्षा करो यह रत्नों की ढेरी फैली हुई है ग्रहण करो क्यों दौड़ते हो यह धन सामान्य है मेरा वचन मिथ्या नहीं है, तब उस प्रकार बोलते वे मनुष्य भय से भागे

हे विवस पांडवो फिर कहूंगा विचार मत करो, उस प्रकार की दारुणाजन तप का वर्त्तमान होने पर भय से संनस्त मन दमयंती जगउठी, वहां सब लोक को भय देने वाली, और पहिले न देखी हुई भय को देखा कमल लोचन वाला उस को देख कर बंद मुख श्वासलेली भय से विह्वल उठ खड़ी हुई वहां उन समूह से जो कोई मनुष्य अविक्षत मुक्त हुए, वे सब साथ बोले कि यह किसके कर्म का फल है निश्चय हम लोगों ने बड़े यशवान मणिभद्र को नहीं पूजा, तथा यक्षों के राजा श्रीमान प्रभु कुवेरजी नहीं पूजे अथवा प्रथम विघ्न करने वालों की पूजा नहीं की, अथवा शकुनों का फल विपरीत है यह निश्चय है फिर महा विपरीत नहीं थे दूसरी क्या बात है कि यह आपद प्राप्त हुई, ज्ञाति और द्रव्य से रहित और हीन दूसरे पुरुष बोले कि अब जो यह उन्मत्त दर्शन स्त्री बड़े जन समूह में, विकृताकार मानुष रूप को धारण करके प्रवेश हुई प्रथम उसने यह परम दारुण माया रची, निश्चय वह राक्षसी है अथवा भयंकरी पक्षी या पिंशाची है यह सब उसका पाप है इस में विचारना नहीं, जो हम उस पापन बहुत दुखदाई जन समूह नाशक को देखें तो लोष्ट धूलि, तृण काष्ट से और मुष्टिओं से, उस जन समूह की कुत्सित कृत्या को अवश्य ही मारें फिर दमयंती उन्हों के उस अति दारुण वचन को सुनकर, लज्जित भय युक्त और संविग्न भागी जिधर

वन था अपने उस पाप को शंका करने वाली ने वि-
लाप किया, आश्चर्य कि मेरे ऊपर ईश्वर का दारुण
कोप है कुशल को नहीं करता यह किस के कर्म का
फल है, मैं शरीर मन वाणी से किया हुआ किसी
का कुछ थोड़ा अशुभ भी स्मरण नहीं करती हूं यह
किस कर्म का फल है, निश्चय जन्मांतर में किया
हुआ बड़ा पाप मुझपर पड़ा इस अपरा दार्शनी क-
ठिन आपद को मैंने प्राप्त किया, भर्ता के राज्यका
हरण सुजन से पराजय भर्ता के साथ वियोग पुत्रों
से अलग होना, अनाथ होना बहुत सर्पों से सेवित
बन में वास इन सब दुखों को पाया, हे राजन्! तब
इस के पीछे दूसरा दिन प्राप्त होने पर मरने से शेष
मनुष्यों ने, उस देश से निकलकर वह नाश को
और भाई पिता पुत्र और मित्र को शोचा, वहां द-
मयन्ती ने शोच किया, कि मैंने कौन पाप किया जो
यह जन समूह निर्जन बन में भी मुझ को प्राप्त हुआ,
वह मेरे मंदभाग्य से हाथियों के झुंड से मारा गया
निश्चय अब भी मुझ को दीर्घ काल तक दुख प्राप्त
होने के योग्य है, मैंने वृद्धों का शासन सुना जिस
का काल प्राप्त नहीं हुआ वह नहीं मरता है जो
दुखियों में अब हाथियों के झुंड से मर्दन नहीं की
गई निश्चय इस लोक में मनुष्यों का कुछ कर्म वि-
ना दैव के किया हुआ विधान नहीं है, मैंने बाल
अवस्था में भी कुछ पाप कर्म नहीं किया, जोकि

शरीर मन और वाणी से होता है जो यह दुख प्राप्त हुआ मैं मानती हूं कि स्वयंवर के कारण लोकपाल आये, वहां नल के अर्थ देवता मुझ से उत्तर दिये गये निश्चय मैंने उन्हों के प्रभाव से वियोग को पाया, तब वह पतिव्रता वारांगना दुख से पीड़ित दमयन्ती इस प्रकार के उन प्रलापों को करके, तब मरने से शेष वेद पारग ब्राह्मणों के साथ चली, हे राजाओं में श्रेष्ठ जैसे शरत ऋतु की चंद्रकला, थोड़े काल के पीछे उस चलती हुई बाला ने सायान्ह समय सत्य दर्शी सुबाहु राजा चंदेरी के बड़े पुरको प्राप्त किया, इस के पीछे अर्द्ध वस्त्र से संवीत उत्तम पुर में प्रवेश हुई उस विह्वल कृश दीन युक्त के शीघ्रसरनेणी, उन्मत्त की तुल्य चलती दमयंती को पुरवासियों ने देखा, तब राजा चंदेरी के पुर में प्रवेश करने वाली उस दमयंती को देखकर, वहां आप्रियों के बालक पुत्र कुतूहल से पीछे चले, उस से घिरी हुई वह दमयंती राज भवन के समीप गई, प्रासाद के ऊपर खड़ी हुई राज माता ने मनुष्यों से युक्त उस को देखा और धात्री को बोली कि इस को यहां मेरे पास लाओ, शरणार्थिणी बाला मनुष्यों से क्लेश पाती है वैसे रूप को देखती हूं कि मेरे घर को प्रकाशित करती है यह कल्याणी उन्मत्त वंश और लक्ष्मी के तुल्य आयत लोचन है, वह उस जन समूह को हटा कर और उत्तम भवन के ऊपर, चढ़कर आश्चर्य

युक्त ने दमयन्ती को पूछा इस प्रकार दुख से आविष्ट
भी परम रूप को धारण करती है, बादलों में बिजली
के समान प्रकाश करती है मुझ से कहो कौन है और
किस की है भूषणों से वर्जित भी तेरा रूप मानुषी
नहीं है अर्थात दिव्य है, हे देव प्रभासहाय रहित तू
मनुष्य से उद्वेग नहीं करती है दमयंती उस के उन
बचनों को सुनकर बोली, मुझ को भर्त्ता की अनुब्रता
सैरंध्रीदासी इच्छाके अनुसारवास करनेवालीमानुषी जानो,
मुझे फल मूल को भोजन करने वाली और जहां
सायंकाल हो वहीं ठहरने वाली अकेली जानों मेरा
भर्त्ता असंख्येय गुणों का स्वामी और सदा मेरा अ-
नुब्रत है और मैं भी उस की भक्त छाया की तुल्य
मार्ग में उस बीर के पीछे चलने वाली हूं, दैव इच्छा
से उसका अति प्रसंग श्रेष्ठ द्यूत में हुआ, उस द्यूत
में निर्जित अकेले ने वनको प्राप्त किया, उस
एक वस्त्र रखने वाले बीर उन्मत्त की समान विह्वल
भर्त्ता को आश्वासन करती मैं भी वन को गई कभी
वन में उस भूखे विमना वीर ने किसी कारण के
बीच उस एक वस्त्र को भी त्याग किया, तब उस
एक वस्त्र वाले नग्न उन्मत्त की समान अचेत के पी-
छे चलती मैं बहुधा रातों को नहीं सोई, उस के पीछे
मुझ सोती निष्पाप को अर्द्ध वस्त्र काटकर त्याग किया,
सो भर्त्ता को ढूंढ़ती दिन रात जलती मैं उस कमल
गर्भ की तुल्य अभागिन हृदय प्रिय प्रभुको नहीं

देखती उस देवता की तुल्य प्राणों के ईश्वर प्रिय प्रभु को नहीं पाती हूं, पीड़ामान आप राजमाता उस प्रकार अश्रु से पूर्ण नेत्र बहुत विलाप करने वाली, पीड़ितस्वर उस दमयन्ती को बोली, हे कल्याणी मेरे पास वासकर तुझ पर मेरी परम प्रीति है, हे भद्रे मेरे पुरुष तेरे भर्त्ता को ढूंढ़ेंगे इधर उधर से घूमता हुआ आपही आजावै, हे भद्रे यहां ही वास करती हुई भर्त्ता को पावेगी, दमयन्ती राजमाता के वचन सुनकर यह वचन बोली, हे वीरों की माता मैं नियम के साथ तेरे निकट वास करने को उत्साह करती हूं उच्छिष्ट भोजन नहीं करूं पादधावन नहीं करूं और किसी अवस्था में दूसरे पुरुषों से बात नहीं करूं जो कोई मुझ को चाहै वह पुरुष तेरे यहां दंड के योग्य होवै, यह मंद तेरा वध्य होवै यह मेरा व्रत स्थापित है, परंतु मैं भर्त्ता के अर्थ ब्राह्मणों को देखूं जो इस प्रकार होतो तेरे समीप वास करूंगी संशय नहीं, इसके विपरीत कहीं वास करना मेरे हृदय में नहीं वर्तता है राजमाता अति प्रसन्न मन के साथ उस को यह बोली, तेरे ऐसे व्रत को देखकर यह सब करूंगी, हे भरतवंशी राजा युधिष्ठिर राजमाता दमयन्ती को इस प्रकार कहकर उस के पीछे; अपनी पुत्री सुनंदा नाम को बोली हे सुनंदा इस देवी रूप सैरंध्री को जानो, यह आयु में तुल्य तेरी सखी हो निरुद्विग्न मन तू इसके साथ आनंद कर, उस के पीछे सखियों से परिवारित अति

प्रसन्न सुनंदा दमयन्ती को लेकर गृह को आई, तब वह दमयन्ती वहां अच्छे प्रकार रचे हुए सब काम्य पदार्थों से पूजित और उद्वेग रहित बहुत आनंद युक्त हुई और वास किया ॥

चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः

पंचदशोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले हे राजन राजा नल ने दमन्यती को छोड़कर गहन बन में बड़े दावानल को देखा, निश्चय वहां बन के मध्य किसी प्राणि के शब्द को सुना कि हे पवित्र यश वाले राजा नल दौड़ो यह ऊंचेस्वर से बारंवार कहा, मत भय करो नल ने यह कहकर और अग्नि के मध्य प्रवेश करके उस कुंडली बांध कर शयन करने वाले सर्प राज को देखा, तब उस कंपित सर्प ने प्रांजली होकर नल को कहा कि हे राजन मुझ को कर्कोट नाम सर्प जानो, हे राजन मैंने बड़े तपस्वी ब्रह्म ऋषि नारदजी का अपमान किया हे राजन उस कोप युक्त से शाप दिया गया हूं, कि तू जड़ की तुल्य ठहरो जबतक नल तुझ को वहां से नहीं ले जावेगा, वहां तू मेरे दिये हुए शाप से मुक्त होगा, मैं उस के शाप से पद से पद चलने को समर्थ नहीं हूं तुम को कल्याण का उपदेश करूंगा

आप मेरी रक्षा करने को योग्य हो, मैं तेरा सखा हूंगा मेरी समान पन्नग नहीं और भार रहित हूंगा मुझ को लेकर शीघ्र चल, वह नागेंद्र इस प्रकार कहकर अंगूठे की तुल्य हुआ और नल उस को लेकर दावानल से रहित देश में आया, फिर करकोटक नाम अग्नि से मुक्त आकाश देश को पाकर उस छोड़ने के इच्छा मान नल को बोला, हे राजा निषध्र आपने कितने ही पदों को गिनता हुआ चल हे महा बाहु मैं वहां तेरे परम कल्याण को करूंगा, उस के पीछे गिनती का आरंभ करने वाले नल को दशवें पद पर काटा उस काटे हुए का वह रूप शीघ्र अंतर ध्यान होगया, वह नल अपने रूप विकार को देख कर विस्मित खड़ा हुआ उस राजाने निज रूप धारी नाग को देखा, उसके पीछे करकोटक नाग सात्वन करता नल को बोला मुझ से तेरा रूप अंतर ध्यान किया गया तो तुझ को मनुष्य नहीं जाने, हे नल जिस पुरुष के कारण से बड़े दुख से वंचित हुआ है वह तेरे शरीर के बीच मेरे विष से दुखी बास करेगा, जबतक वह विष से युक्त अंग तुझ को नहीं छोड़ेगा हे महाराज निश्चय तबतक तेरे शरीर में दुख से बास करेगा, हे राजेन्द्र जिस ने निष्पाप और इस दुख के अयोग्य तुम को वंचित किये मैंने क्रोध से उस की निन्दा करके आप की रक्षा की, हे नरोत्तम तुम को डाढ़ रखने वाले प्राणियों में और शत्रुओं में

भी भय नहीं होगा और हे राजन मेरी कृपा से ब्रह्म ज्ञानियों से भी नहीं होगा, हे राजन विष की पीड़ा तुझ को नहीं होगी, हे राजेंद्र संग्रामों में निरंतर जय को पाओगे, हे राजेन्द्र तुम यह कहते कि मैं बाहुक नाम सुत हूं यहां से राजा ऋतुपर्ण के समीप जाओ वह अक्ष विद्या में निपुण है, हे निषध के ईश्वर अभी अयोध्या नगरी को जाओ वह राजा अश्व हृदय [अश्व विद्या] के बदले अक्ष हृदय [पाशों की विद्या] तुझ को देगा, वह इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न श्रीमान राजा तेरा मित्र होगा, जब तू चतुर होगा तब कल्याण से युक्त होगा, तुम स्त्री राज्य और पुत्रों से मिलोगे शोक मत करो, यह तुम से सत्य कहता हूं, हे राजन जब तुम स्वरूप को देखा चाहो तब मैं तुम से स्मरण के योग्य हूं और इस वस्त्र को धारण करना, इस वस्त्र से ढका हुआ निज रूप को पावेगा, तब नाग राजने यह कहकर उस के अर्थ दिव्य वस्त्र का जोड़ा दिया, हे कौरव राज वह नाग राजा नलको इस प्रकार उपदेश करके और वस्त्र देकर उसके पीछे वहां ही अंतर ध्यान हो गया ॥

पंचदशोऽध्यायः समाप्तः

———

षष्ठदशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले नल राजा निषध उस नाग के अंतर ध्यान होने पर चला और दशवें दिन ऋतुपर्ण के नगर में प्रवेश हुआ, वह राजा को इस प्रकार बोलता कि मैं बाहुक नाम घोड़े के चलाने में योग्य हूं और पृथ्वी पर मेरे समान नहीं है, समीपस्थित हुआ, फिर मैं कष्टों और बुद्धिमानी के कार्यों में पूछने के योग्य हूं इस लोक में जो शिल्प विद्या और दूसरे कठिन कर्म हैं उन सब के करने को यत्न करूंगा, हे ऋतुपर्ण मुझ को पालन कर, ऋतुपर्ण बोला, हे बाहुक तेरा कल्याण हो, वासकर, तू यह सब करेगा, सदा मेरी बुद्धि वाहनों के शीघ्र चलने में विशेष इच्छा रखती है, सो तुम उस योग्य में स्थित हो, जिस से मेरे घोड़े शीघ्र चलने वाले होवैं, तू इस का अध्यक्ष है तेरा वेतन (मासिक) दशसहस्र सुवर्ण हैं, वार्शोय और जीवल नाम सूत सदा तेरे समीप स्थित होंगे, तू इन्हीं के साथ प्रीतिमान होगा, हे बाहुक मेरे पास वासकर, बृहदश्व बोले उस राजा से इस प्रकार कहा हुआ पूजित नल वार्शोय और जीवल के साथ ऋतुपर्ण के उस नगर में बसा, दमयंती को शोचते उस राजा ने वहां वास किया और सदा सायंकाल पर इस श्लोक को पाठ किया, वह भूख प्यास से पीड़ित श्रांत तपस्विनी कहां सोती है अथवा उस मंद को स्मरण करती अपने

जीवन अर्थ किस के पास स्थित है, रात में इस प्रकार बोलते राजा को जीवन बोला, हे वाहुक तुम किस को सदा शोचते हो मैं सुना चाहता हूं, हे आयुष्मान् वह किस की स्त्री है जिस को इस प्रकार शोचते हो राजानल उस को बोला कि किसी मंदबुद्धि की स्त्री बहुमती हुई उस का बचन अति दृढ़ नहीं था उस मंदने किसी प्रयोजन से उस के साथ वियोग किया, वह मंद बुद्धि वियोगी दुख से पीड़ित दिन रात शोक से दह्यमान और अलंदित घूमता है, रात्रि के समय उस का स्मरण करता एक श्लोक को गाता है वह सब पृथ्वी पर घूमती कहीं कुछ पाकर, फिर भी उस का स्मरण करता उस दुख के अयोग्य वास करता है वह स्त्री कष्ट के बीच भी बन में उस पुरुष के पीछे गई, उस अल्प पुण्य पुरुष से त्यागी गई जो वह जीवे है तो दुष्कर कर्म है अकेली बाला मार्गों को न जानने वाली उस अबला के अयोग्य, भूक प्यास से परीतांग जो जीवे है सो कठिन कर्म है, हे श्रेष्ठ उस अल्प भाग्य मंद बुद्धि ने सदा श्वापदों से आरित बड़े दारुण बन में त्यागी इस प्रकार राजा नल दमयन्ती को स्मरण करता उस राजा के स्थान में अज्ञात वास को बसा ॥

षष्टदशमोऽध्यायः समाप्तः

षष्ठदशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले नल राजा निषध उस नाग के अंतर ध्यान होने पर चला और दशवें दिन ऋतुपर्ण के नगर में प्रवेश हुआ, वह राजा को इस प्रकार बोलता कि मैं बाहुक नाम घोड़े के चलाने में योग्य हूं और पृथ्वी पर मेरे समान नहीं है, समीपस्थित हुआ, फिर मैं कष्टों और बुद्धिमानी के कार्यों में पूछने के योग्य हूं इस लोक में जो शिल्प विद्या और दूसरे कठिन कर्म हैं उन सब के करने को यत्न करूंगा, हे ऋतुपर्ण मुझ को पालन कर, ऋतुपर्ण बोला, हे बाहुक तेरा कल्याण हो, वासकर, तू यह सब करेगा, सदा मेरी बुद्धि वाहनों के शीघ्र चलने में विशेष इच्छा रखती है, सो तुम उस योग्य में स्थित हो, जिस से मेरे घोड़े शीघ्र चलने वाले होवैं, तू इस का अध्यक्ष है तेरा वेतन (मासिक) दशसहस्र सुवर्ण हैं, वार्शोय और जीवन नाम सूत सदा तेरे समीप स्थित होंगे, तू इन्हीं के साथ प्रीतिमान् होगा, हे बाहुक मेरे पास वासकर, बृहदश्व बोले उस राजा से इस प्रकार कहा हुआ पूजित नल वार्शोय और जीवन के साथ ऋतुपर्ण के उस नगर में बसा, दमयंती को शोचते उस राजा ने वहां वास किया और सदा सायंकाल पर इस श्लोक को पाठ किया, वह भूख प्यास से पीड़ित श्रांत तपस्विनी कहां सोती है अथवा उस मंद को स्मरण करती अपने

जीवन अर्थ किस के पास स्थित है, रात में इस प्रकार बोलते राजा को जीवन बोला, हे बाहुक तुम किस को सदा शोचते हो मैं सुना चाहता हूं, हे आयुष्मान वह किस की स्त्री है जिस को इस प्रकार शोचते हो राजानल उस को बोला कि किसी मंदबुद्धि की स्त्री बहुमती हुई उस का वचन अति दृढ़ नहीं था उस मंदने किसी प्रयोजन से उस के साथ वियोग किया, वह मंद बुद्धि वियोगी दुख से पीड़ित दिन रात शोक से दह्यमान और अलंदित घूमता है, रात्रि के समय उस का स्मरण करता एक श्लोक को गाता है वह सब पृथ्वी पर घूमती कहीं कुछ पाकर, फिर भी उस का स्मरण करता उस दुख के अयोग्य वास करता है वह स्त्री कष्ट के बीच भी वन में उस पुरुष के पीछे गई, उस अल्प पुण्य पुरुष से त्यागी गई जो वह जीते है तो दुष्कर कर्म है अकेली बाला मार्गों को न जानने वाली उस अबला के अयोग्य, भूक प्यास से परीतांग जो जीते है सो कठिन कर्म है, हे श्रेष्ठ उस अल्प भाग्य मंद बुद्धि ने सदा स्वापदों से आरित बड़े दारुण वन में त्यागी इस प्रकार राजा नल दमयन्ती को स्मरण करता उस राजा के स्थान में अज्ञात वास को वसा ॥

षष्टदशमोऽध्यायः समाप्तः

सप्तदशमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले नल के राज्य हरण और भार्या सह दासभाव के पाने पर राजा भीमने नल के दर्शन की इच्छा से ब्राह्मणों को भेजा, राजा भीमने बहुत धन देकर उनको उपदेश किया नलको और मेरी पुत्री दमयन्ती को ढूंढो, इस कर्म के सिद्ध होने और राजा नल के विज्ञात होने पर सहस्र गौं दूंगा तुम में जो उन दोनों को लावेगा, क्षेत्रादि और नगर की तुल्य ग्राम को दूंगा जो दमयन्ती वा नल भी यहां लाने को योग्य नहीं है, तौ जानने पर भी सहस्र गौ धन दूंगा इस प्रकार कहे हुए वे प्रसन्न ब्राह्मण सब दिशाओं को गये, भार्या सहित राज नल को प्रदेशों में ढूंढते गये कहीं भी नल वा दमयंती को नहीं कहते थे, उसके पीछे ढूंढते हुए सुदेव नाम ब्राह्मण ने रम्यपुरी चंदेरी में राजभवन के बीच उस दमयंती को देखा, राजा के पुरायाह वाचन में सुनंदा के साथ स्थित और मंद भाग्य को कहते अप्रतिम रूप से युक्त, और धूम जाल से निबद्ध सूर्य की प्रभा के तुल्य अति मलिन कृश विशालाक्षी को देखकर कारणों से निश्चय करता तर्कना करने लगा कि यह भीम की पुत्री है, सुदेव बोला जिस प्रकार यह मैंने पहले देखी यह अंगना उसी रूपवाली है अब मैं इस श्लोक कांता लक्ष्मी की तुल्य को देखकर कृतार्थ हूं पूर्ण चंद्रमा की तुल्य

प्रकाशमान श्यामा (सदा षोड्श वार्षी की) सुंदर और गोल पयोधर वाली और सब दिशाओं को अंध-कार से रहित करने वाली देवी, सुंदर कमल की तुल्य विशाल नेत्र कामदेव की रतिकी समान और सब लोक की इष्टपूर्ण चंद्र प्रभा की तुल्य, उस विदर्भ सरोवर से दैव दोष के कारण मल कीच से लिप्त अंग कमलनी कीसी समान उठाई हुई, पूर्णमासी की रात्रि में राहु से ग्रसे हुए चंद्रमा की समान पति के शोक से व्याकुल दीन शुष्क ग्राह नदी की तुल्य, और उस कमल सरोवर की तुल्य जिस के पत्र कमल टूट गये हों और पक्षी उड़ गये हों और हाथी की सूंड़ से परामृष्ट व्याकुल हो, अति कोमल और सुडोल अंग रत्न जटित गृह के योग्य सूर्य से दह्यमान उखाड़ी हुई कमलनी की तुल्य, रूप उदारता और गुणों से युक्त शृंगार योग्य,परन्तु शृंगार से हीन और आकाश में नीले बादल से ढकी हुई नवीन चंद्रकला की तुल्य, प्रिय काम भोगों से हीन बंधुजनों से हीन दीन और भर्त्ता के दर्श की इच्छा से देहधारण करने वाली को देखकर कृतार्थ हूं,प्रगट है कि विना भूषण के स्त्री का परम भूषण भर्त्ता है यह शोभामान उस से रहित शोभा नहीं पाती है, नल अत्यंत दुष्कर कर्म करता है जो इस से हीन आत्मा के द्वारा देह को धारण करता है और शोक से पीड़ा नहीं पाता है, इस काले के शांत और कमल की तुल्य बड़े नेत्र

वाली सुख योग्य को दुखी देखकर मेरा मन भी पी-
ड़ित होता है, निश्चय यह शुभा साध्वी कभी भर्ता
के मिलाप से दुख के अंत को पावेगी, जिस प्रकार
रोहिणी चंद्रमा के समागम से, निश्चय राजा नल
इस दमयंती के पुनर्लाभ से प्रीति को पावेगा जैसे
राज से भ्रष्टराजा पृथ्वी को फिर पाकर, अपने तुल्य शील
स्वभाव और अवस्था और अपने समान कुलमें युक्त
दमयंती को राजा नल योग्य है और यह असितेक्षणा
उस के योग्य है, उस अप्रमेय पराक्रम बल से युक्त
नलकी भार्या पति दर्शन की इच्छामान को मुझ
से आश्वासन करना योग्य है, मैं इस पूर्णचंद्र की
तुल्य रूपवाली दुख से पीड़ित ध्यान में तत्पर को
जिसने पहले दुख को नहीं देखा आश्वासन करता
हूं, बृहदश्व बोले सुदेव ब्राह्मण इस प्रकार नाना
विधि के कारण और लक्षणों से उस को विचार कर
और पास जाकर दमयंती को बोला, हे दमयंती मैं
तेरे भ्राता का प्रिय सखा सुदेव ब्राह्मण हूं राजा भीम
के बचन से तेरे ढूंढ़ने को यहां आया, हे रानी तेरे माता
पिता और सब भ्राता कुशली हैं और वे दोनों पुत्र
पुत्री आयुष्मंत कुशली वहां स्थित हैं, तेरे कारण से
बंधुवर्ग निर्जीव की तुल्य और ढूंढ़ने वाले सैकड़ों
ब्राह्मण पृथ्वी पर घूमते हैं, हे युधिष्टिर दमयंती ने
उस सुदेव को जानकर उस से अपने सुहृदों को क्रम
पूर्वक पूछा, हे राजन् राजा विदर्भ की पुत्री शोक से

कर्षित दमयंती ने भ्राता के सखा द्विजोत्तम सुदेव को अकस्मात देखकर अत्यंत रुदन किया, हे भरत-वंशी उस के पीछे उस रोती और सुदेव के साथ एकांत में बात करती दमयन्ती को देखकर शोक से कर्षित सुनंदाने, अपनी माता से कहा कि सैरंध्री ब्राह्मणों से मिलकर अत्यंत रोती है उस को जानो जो मानो, तब इस के पीछे राजा चंदेरी की माता अंतःपुर से वहां गई जहां वह बाला ब्राह्मणों के साथ स्थित थी, हे राजन् उस के पीछे राजमाता ने सुदेव को बुलाकर पूछा कि यह भाविनी किस की भार्या है वा किस की पुत्री है, यह वाम लोचना भर्त्ता और ज्ञाति वालों से कैसे नष्ट हुई, हे विप्र ऐसी अवस्था वाली सती यह तुमने कैसे जानी, मैं तुमसे यह सब विशेष सुना चाहती हूं, इस देव रूपिणी को पूछने वाली मुझ को तत्व पूर्वक कहो, हे राजन् उस से इस प्रकार कहे और सुख से बैठे हुए द्विजो उत्तम सुदेवने दमयंती का जैसा वृत्तान्त था कह सुनाया ॥

सप्तदशमोऽध्यायः समाप्तः
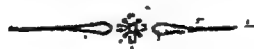
अष्टदशमोऽध्यायारंभः

सुदेव बोला बड़ा तेजस्वी धर्मात्मा भीम नाम

विदर्भ देशों का राजा है यह कल्याणी दमयन्ती नाम से विख्यात उस की पुत्री है, फिर बीरसेन का बेटा नल नाम निषध का राजा है यह कल्याणी उस बुद्धि मान पवित्र यश वाले की भार्या है; वह राजा द्यूत में भ्राता से पराजित और हतराज्य, दमयन्ती के साथ गया वह किसी से नहीं जाना गया, सो हम दमयन्ती के अर्थ इस पृथ्वी पर घूमते हैं वह यह बाला तेरे पुत्र के भवन में मिली, इस के समान रूप वान मानुषी विद्यमान नहीं है इस की भ्रके मध्य शरीर के साथ उत्पन्न होने वाला यह उत्तम पिप्लु [रक्त मसा] है, मैंने इस श्यामा का पिप्लु कमल के तुल्य प्रकाशमान मल से युक्त देखा जैसे बादल से ढका हुआ चंद्रमा, यह ईश्वर का रचा हुआ, पिप्लु ऐश्वर्य के अर्थ चिन्ह अत्यंत प्रकाश नहीं करता है; जैसे कृष्णपक्ष के परिवा की चन्द्र कला इस का रूप और शरीर मल से ढका हुआ नष्ट नहीं होता और बिना श्रृंगार के भी सुवर्ण के तुल्य प्रत्यक्षय में प्रकाश करता है, इस शरीर और इस पिप्लु से सूचित यह बाला देवी मुझ से लक्षित हुई जैसे आतप से ढका हुआ अग्नि, हे राजन उस सुदेव के उस बचन को सुनकर सुनंदा ने पिप्लु के ढांकने वाले मलको धोडाला, दूर किये हुए मल से उस दमयंती का पिप्लु शोभायमान हुआ जैसे बादल रहित आकाश में चन्द्रमा, हे भरत वंशी सुनंदा और राजमाता पिप्लु को देखकर रुदन करती उस को मि-

लकर एक मुहूर्त्त स्थित हुई, राजमाता वाष्प [आंसू] को छोड़कर धीरे से यह बोली तू मेरी भगिनी की पुत्री है इस पिप्लु से जानी गई, हे सुंदर दर्शन मैं और तेरी माता दोनों उस सुदामा नाम महात्मा राजा दशार्ण की पुत्री हैं, वह राजा भीम को दी फिर मैं बीर बाहु को दी और उत्पन्न हुई तू दशार्ण में अपने पिता के घर मैंने देखी, हे भाविनी जैसा तेरे पिता का गृह है वैसा ही मेरा गृह है और जैसा मेरा ऐश्वर्य है उसी प्रकार तेरा है, हे राजन दमयंती अति प्रसन्न मन के साथ माता की भगिनी को यह बचन बोली, मैं बिना जानी हुई सब कामनाओं से तृप्त और सदा तुझ से रक्षित सुख से तेरे पास बसी हूं, सुख से भी अति सुख वाला बास होगा संशय नहीं हे माता दीर्घ काल से मुझ परदेश बासनी के आज्ञा देने योग्य हो, वे मेरे दोनों बालक वहां बास करते हैं व पिता से और मुझ से हीन और शोक से पीड़ित कैसे होंगे, जो तुम यहां मुझ पर कुछ भी प्यार किया चाहती हो तो शीघ्र मेरे जाने को आज्ञा दो मैं विदर्भ पुरी को जाना चाहती हूं, हे राजन प्रसन्न मोसी ने बहुत अच्छा कहकर फिर पुत्र की अनुमति से बड़ी सेना से रक्षित उस दमयंती को बिदा किया, हे भरत श्रेष्ठ राजमाता ने सुंदर अन्न पान और सामग्री से युक्त श्रीमती दमयंती को ऐसे बाहन से जिस को मनुष्य ले चलें भेज दिया, फिर उस के पीछे वह थोड़े काल में ही

विदर्भ देशों में पहुंची अति हृष्ट सब बंधु जन ने उस को भले प्रकार पूजा हे राजन यशस्विनी देवी दमयंती ने सब बांधवों को और उन दोनों पुत्र पुत्री को दोनों माता पिता को और सब सखी जन को कुशली देखकर परम विधि के साथ देवता और ब्राह्मणों को पूजा, प्रसन्न राजा ने पुत्री को देखकर सहस्र गौ ग्राम और धन से सुदेव को तृप्त किया, हे राजन वह भाविनी वहां पिता के भवन में एक रात वास करके विश्रांत होकर माता को यह वचन बोली, हे माता जो मुझ को जीवती चाहती है तो मैं तुझ को सत्य कहती हूं नर वीर नल राजा चंदेरी के ढूंढकर लाने में यत्न करो, दमयंती से उस प्रकार कही अति दुखी आश्रुपात से पूर्ण अंग उस देवी रानी ने कुछ उत्तर नहीं दिया, तब उस अवस्था वाली उस रानी को देखकर सब अंतः पुर (नारी भवन) अत्यंत हाहा भूत हुआ और अत्यंत रुदन किया, उस के पीछे भार्या महाराज भीम को बोली, आप की पुत्री दमयंती भर्त्ता को शोचती है, हे नृप उस ने लज्जा को दूर करके आप को तेरे प्रेष्य जन पवित्र यश वाले नल के ढूंढने में यत्न करो, उस से प्रेरित राजाने वश वर्ती ब्राह्मण सब दिशा को भेजे और आज्ञा दी कि नल के ढूंढने का यत्न करो, तब उस के पीछे राजा विदर्भ की आज्ञा से भेजे हुए ब्राह्मण दमयंती के पास जाकर उसी प्रकार दमयंती को बोले, फिर दमयंती उन को बोली

कि सब देशों में सत्पुरुषों के बीच तहां २ वारंवार इस वचन को कहो, हे प्रिय! इसलिये तुम मेरे अर्द्ध वस्त्र को काटकर और मुझ प्रिया अनुरक्त सोती हुई को वन में छोड़कर कहां चले गये? निश्चय यह वाला जिस प्रकार तुम ने देखी उसी प्रकार वाट देखने वाली अर्द्ध वस्त्र से संवृत और अति दह्यमान है, हे वीर पार्थिव कृपा करो और उस शोक से निरंतर रुदन करने वाली उस प्रिया के उत्तर को कहो, इस प्रकार और भी कहने योग्य है जैसे मुझ पर कृपा करो, वायु से धुयमान अग्नि वन को जलाती है, सदा पत्नी पति से पालन और रक्षा के योग्य है तुम धर्मज्ञ और सत्पुरुष के वे दोनों गुण किस कारण से नष्ट हुए, आप सदा विख्यात ज्ञानी कुलीन और दयावान हैं, मैं शंका करती हूं कि मेरे भाग के निक्षय से तुमने दया को त्याग किया, हे नरोत्तम सो तुम मुझ पर दया करो दया ही परम धर्म है मैंने तुम से सुना, जो इस प्रकार बोलने वाले तुमको किसी प्रकार उत्तर देवे वह नल सब प्रकार से जानने योग्य है, यह कौन है और कहां रहता है, हे द्विजोत्तमो जो मनुष्य इस वचन को सुनकर उत्तर देवे उसका वह वचन सुनकर उत्तर देवे, उसका वह वचन सुनकर मुझ से कहने योग्य हो, जिस प्रकार मेरी आज्ञा से कहने वाले तुम को नहीं जाने उसी प्रकार अंतर्हुत तुम लोगों से पुनरागमन करने योग्य है, जो यह धनवान होवै

अथवा अन्न होवै वा असमर्थ भी होवै इस को चिकीर्षित जानने योग्य है, हे राजन् जब इसी प्रकार कहते हुए वे ब्राह्मण उस प्रकार व्यसनी नल के ढूंढने अर्थ सब दिशाओं को गये, हे राजन् पुर देश ग्राम क्षेत्र तथा आश्रमों को ढूढ़ते उन ब्राह्मणों ने नलको नहीं पाया, हे राजन् उसी प्रकार उन सब ब्राह्मणों ने तहां २ दमयंती के उस बचन को जैसे कहा था श्रवण कराया ॥

अष्टदशमोऽध्यायः समाप्तः
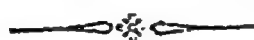
एकोनविंशोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले फिर दीर्घ काल के पीछे पर्णाद नाम ब्राह्मण नगर को आकर दमयंती को यह वचन बोला, हे दमयंती नल राजा निषध का ढूंढने वाला मैं अयोध्या नगरी को जाकर ऋतुपर्ण के समीप स्थित हुआ, देव वर्णिनी मैं ने वह तेरा वाक्य जिस प्रकार कहा महाजन के बीच महाभाग ऋतुपर्ण को सुनाया, राजा ऋतुपर्ण उस को सुन कर कुछ नहीं बोला और मुझ से वारंवार कहा हुआ कोई सभासद भी नहीं बोला, ऋतुपर्ण का कोई पुरुष बाहुक नाम मुझे राजा से अनुज्ञात को यह बोला, जोकि उस नरेंद्र का सूत विरूप ह्रस्व बाहुक घोड़ों के शीघ्र चलाने में

कुशल और भोजन में सिष्ट करता था, वह बहुत प्रकार से श्वास लेकर और बारंवार रोकर और मुझ को कुशल पूछकर पीछे यह बोला, विषम को भी पाने वाली कुलीन स्त्रियां आप को आप रक्षा करती हैं और उन से सत्य स्वर्ग जीता गया इस में संशय नहीं भर्ताओं से रहित भी कभी कोप नहीं करती हैं और श्रेष्ठ स्त्रियां प्राणों को जिन का कवच भर्ता के चरित्र हैं धारण करती हैं जो वह उस विषमस्थ मूढ़ और सुख हीन से त्यागी गई उस में क्रोध करने को योग्य नहीं है प्राण यात्रा चाहने वाले पक्षियों में हृत वस्त्र मन की व्यथाओं से दधमान की श्यामा सत्कृत अथवा असत्कृत भी उस अवस्था वाले भ्रष्ट राज्य लक्ष्मी से हीन भूखे व्यसन में डूबे पति को देखकर क्रोध करने को योग्य नहीं है मैं उस के उस वचनको सुनकर शीघ्र यहां आया सुनकर आप प्रमाण हैं राजा से निवेदन करो, हे राजन् पर्णाद के उस वचन को सुनकर अश्रु पूर्णाक्षी दमयंती माता को एकांत में मिलकर बोली हे माता यह अर्थ कभी भीम से नल लाने योग्य नहीं है मैं तेरे समीप द्विज सत्तम सुदेव को प्रेरणा करूंगी, जिस प्रकार राजा भीम मेरे मत को नहीं जाने उसी प्रकार तुझ से करने योग्य है जो मेरा प्रिय चाहती है जिस प्रकार मैं शीघ्र सुदेव के द्वारा बांधवों के पास लाई गई, हे माता उसी मंगल के साथ सुदेव ब्राह्मण नल के लाने को यहां

से अयोध्या नगरी को शीघ्र जावे देर न करे उस के पीछे भाविनी दमयन्ती ने विश्रांत द्विजसत्तम पर्णाद को, बड़े धन से पूजा, और कहा कि यहां नल के आने पर फिर तुझ को धन दूंगी, तुमने मेरा बहुत कार्य किया जो दूसरा नहीं करेगा हे द्विजोत्तम जो मैं शीघ्र भर्ता से मिलूंगी, इस प्रकार कहा हुआ कृतार्थ बड़े मनवाला ब्राह्मण मंगली आशीर्वादों से आश्वान करके अपने गृह को गया, हे युधिष्ठिर उस के पीछे दुख शोक से युक्त दमयन्ती माता के समीप सुदेव को बुलाकर बोली, हे सुदेव इच्छा के अनुसार चलने वाले की समान दौड़ता हुआ अयोध्या नगरी को जाकर अयोध्या वासी राजा को कहो भीम की पुत्री दमयन्ती फिर स्वयंवर में स्थित होगी वहां सब राजा और राज कुमार जाते हैं, तथा जो स्वयंवर का समय कल्पना किया गया वह कल होगा जो यह गति तुम से संभव है तो हे अरिंदम शीघ्र चलो, वह सूर्य उदय पर दूसरे भर्त्ता को वरेगी वह वीर नल नहीं जाना जाता है कि जीवित है वा नहीं, हे महाराज तब उस से इस प्रकार कहे हुए सुदेव ब्राह्मण ने अयोध्या को जाकर राजा ऋतुपर्ण को सब वृत्तान्त कहा ॥

एकोनविंशोऽध्यायःसमाप्तः

विंशतितमोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले राजा ऋतुपर्ण सुदेव के वचन को सुनकर श्लक्ष्ण वाणी से सांत्वन करता बाहुक को बोला, हे हय तत्व के जानने वाले बाहुक जो तू मानता है तो मैं एक ही दिन में विदर्भ देश के बीच दमयंती के स्वयंवर में जाना चाहता हूं, हे कौंतेय उस राजा से इस प्रकार कहे हुए नल का मन दुख से फट गया और बड़े मन वालेने बड़ा ध्यान किया, दुख से मोहित दमयंती यह कहैं और करैं अथवा मेरे अर्थ यह बड़ा उपाय विचारा होवै, बड़ा दुख और निरदयापन है कि राजा विदर्भ की पुत्री भर्त्ता की इच्छावान तपस्विनी मुझ नीच कृपण पाप बुद्धि से निरादर की गई, लोक में स्त्री का स्वभाव चलित है मेरा दारुण दोष है इस प्रकार भी हो वह प्रवास से प्रीति शून्य ऐसा भी करे, मेरे शोक और निराश से संविग्न वह तन मध्यमा कभी ऐसा नहीं करै विशेषकर वह संतान सहित है, जो इस में सत्य वा असत्य है जाकर निश्चय को पाऊंगा निश्चय मैं ऋतुपर्ण की कामना को अपने अर्थ करता हूं दुखी मन बाहुक मन से यह निश्चय करके हाथ जोड़कर राजा ऋतुपर्ण को बोला, हे राजन मैं तेरे वचन को अंगीकार करता हूं हे पुरुषोत्तम एक ही दिन में विदर्भ नगरी को जाऊंगा, हे राजन उस के

पीछे उस वाहुक से राजा ऋतुपर्ण की आज्ञा से अश्वशाला में जाकर घोड़ों की परीक्षा की, ऋतुपर्ण शीघ्र युक्त किया, वाहुक घोड़ों को जानने का इच्छा वाव वारंवार विचार करके, उन घोड़ों के पास गया जोकि कृश समर्थ मार्ग चलने के योग्य कांति और शक्ति से युक्त कुल और शील (सारथी के चित्त की अनुसारता) से भले प्रकार युक्त और शतपदी आदि हीन लक्षणों से रहित बड़ी नासिका और बड़ी हनुवाले, दश भौंरियों से शुद्ध सिंधु देशी, और वायु की तुल्य वेगवान थे राजा उन को देखकर कुछ कोप से युक्त बोला, यह क्या करना चाहा हम तुम से वचन योग्य नहीं ये अल्प वल प्राण वाले घोड़े मुझ को कैसे ले चलेंगे और ऐसे घोड़ों के द्वारा अशब्द मार्ग कैसे चलने के योग्य है [क्या] दूसरे स्वयंवर में दमयंती का विवाह शास्त्र के विपरीत और बड़ी लज्जा की वात है इसलिये गुप्त जाना चाहिये कि कोई न जाने इसी कारण से अशब्द गति को कहा, वाहुक बोला जिनके ललाटपर एक मस्तक पर दो पार्श्व और उप पार्श्व पर दो २ और छाती पर दो २ और पृष्ठ पर एक भौंरी है, ये घोड़े विदर्भ देशों को जावेंगे संशय नहीं तुम जिन दूसरे घोड़ों को मानते हो उन को कहो उन को जोडूं, ऋतुपर्ण बोला हे वाहुक तुम ही हय तत्व के जानने वाले कुशल हो तुम जिन घोड़ों को समर्थ मानते हो शीघ्र उन को

जोड़ो, उस के पीछे कुशल नल ने कुलशील से युक्त वेगवान श्रेष्ठ चारों घोड़ों को रथ में जोड़ा, उस के पीछे शीघ्रता से युक्त राजा जोड़े हुए रथ पर चढ़ा फिर वे उत्तम घोड़े जानुओं से भूमि पर गिर पड़े, हे राजन उस के पीछे नरोत्तम श्रीमान राजा नल ने उन तेज बल से युक्त घोड़ों को सांत्वन किया, उस नल ने सूत वार्ष्णेय को बिठलाकर, और बड़े वेग में स्थित होकर और बाग डोरों से घोड़ों को उठाकर चलाना चाहा, विधि के अनुसार बाहुक से प्रेरित वे उत्तम घोड़े रथी को मोहित करके आकाश को उछले, उस प्रकार उन वायु की तुल्य वेगवान चलते हुए घोड़ों को देखकर अयोध्या के राजा श्रीमान ने बड़े आश्चर्य को पाया, वार्ष्णेय ने उस रथ घोष को और घोड़ों के उस ग्रहण को सुनकर बाहुक के हयज्ञान को शोचा, क्या यह देवराज का सारथि मातल हो तथा वीर बाहुक में वह बड़ा लक्षण दीखता है, फिर क्या यह घोड़ों के कुल और तत्व को जाननें वाला शालिहोत्र (अश्व शास्त्र प्रणेता आचार्य) परम शोभावान रूप को प्राप्त हो, आश्चर्य कि यह शत्रु के पुर को जय करने वाला राजा नल होवै सो यह राजा नल आया इस प्रकार बहुत चिंता की, अथवा यह बात हो कि इस लोक में नल जिस विद्या को जानता है उस को बाहुक जानता है मैं बाहुक और नल के ज्ञान को तुल्य देखता हूं, और यह भी है कि नल

और बाहुक की अवस्था तुल्य है यह महा बली नल नहीं है उसी के तुल्य विद्यमान होवे. दैव विधि और शास्त्रको निरूपणों से युक्त महात्मा इस पृथ्वी पर गुप्त विचरते हैं, गात्र की वैरूप्यता में मेरी बुद्धि का भेद न हो प्रमाण से हीन होवै यह मेरी मत है, यह अवस्था का प्रमाण तुल्य है रूप से विपरीत है मैं बाहुक का निर्णय से सब गुणों से युक्त नल मानता हूं, हे महाराज पवित्र यश वाले नल को सारथी वार्णेय ने इस प्रकार बहुत विचार करके हृदय में बड़ी चिंता की, और महाराज राजा ऋतुपर्ण वार्ष्णेय सारथी के साथ बाहुक की हयज्ञता को विचारता प्रसन्न हुआ, एकाग्रता उत्साह और घोड़ों का संग्रहण और परम यत्न को देखकर बड़े आनंद को पाया ॥

विंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

—************—

एकोविंशतितमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले इस आकाश में चलने वाले राजा नल ने थोड़े ही काल में नदी पर्वत वन और सरोवरों को पक्षी की समान उल्लंघन किया, तब उस प्रकार रथके चलने पर शत्रु के जीतने वाले राजा ऋतुपर्ण ने उत्तरीय वस्त्र को नीचे गिरा देखा, तब उस के पीछे वस्त्र के गिरने पर उस बड़े मनवाले ने

शीघ्र उस नल को कहा कि मैं इस वस्त्र को ग्रहण करूंगा, हे महा बुद्धि इन बड़े वेगवान घोड़ों को रोको, जब तक यह वार्ष्णेय इस मेरे वस्त्र को यहां लाओ, फिर नल ने उसको उत्तर दिया आप का वस्त्र दूर गिरा एक योजन उल्लंघन किया उस के फिर लाने को समर्थ नहीं, हे राजन् तब नल के इस प्रकार कहने पर राजा ऋतुपर्ण ने बन में फल सहित बिभीतक वृक्ष को पाया, राजा उस वृक्ष को देखकर शीघ्र बाहुक को बोला हे सूत तुम संख्या करने में मेरे भी परम बल को देखो, सब, सब बातों को नहीं जानते हैं, सर्वज्ञ कोई नहीं कहीं, एक ही पुरुष में ज्ञान की परिनिष्ठा नहीं है, हे बाहुक इस वृक्ष में जो पत्र और फल भी हैं, और जो यहां पड़े हैं वहां एक सौ एक हैं, हे बाहुक जिन में एक अधिक पत्र रखने वाला एक फल है और दोनों शाखाओं के पत्रों की भी संख्या पांच कोटि है, इस वृक्ष की दो शाखा चुनलो और जो उनमें दूसरी शाखा हैं, उनकी भी संख्या करो इन दोनों में दो सहस्र पंचानवे फल हैं, उसके पीछे बाहुक रथ को खड़ा करके राजा को बोला, हे शत्रु कर्षण राजा तुम मेरी परोक्ष बात को कहते हो, मैं बिभीतक वृक्ष को निष्पत्र कर प्रत्यक्ष करूंगा, हे राजन यहां संख्या करने में परोक्षता विद्यमान नहीं है, हे महाराज आप की आंखों के सामने बिभीतक को काटूंगा, मैं नहीं जानता हूं इस

प्रकार होवै वा नहीं, हे राजन् आपके देखते इस के फलों की संख्या करूंगा, वार्ष्णेय एक मुहूर्त घोड़ों की बाग-डोरों को पकड़ो, राजा उस सूत को बोला कि यह समय विलंब करने को योग्य नहीं परम यत्न में स्थित बाहुक इसको बोला, तुम एक मुहूर्त प्रतिक्षण करो अथवा आप शीघ्रता करते हैं, तो यह कल्याण रूप मार्ग जाता है वार्ष्णेय को सारथि रखने वाले तुम जाओ, हे कुरुनंदन फिर ऋतुपर्ण सांत्वन करता बोला, हे बाहुक तुमही शास्ता हो पृथि में भी दूसरा नहीं है, हे अश्व विद्या के पंडित तेरे कारण से विदर्भ पुरीको जाना चाहता हूं, तेरी शरण में प्राप्त हूं, विघ्न करने को योग्य नहीं है, हे बाहुक तुम जो कुछ मुझ को कहोगे तुम्हारी उसी कामना को करूंगा, जो अब विदर्भ पुरीको जाकर मुझ को सूर्य का दर्शन करावैगा, इसके पीछे बाहुक उस को बोला कि बिभीतक के संख्या करके फिर विदर्भ पुरीको जाऊंगा, इस प्रकार मेरे बचन को कर अनेच्छा की समान राजा उसको बोला कि गिनती करो, हे निष्पाप मैंने शाखा का एक देश बतलाया, हे तत्व के जानने वाले इस की गिनती करो, उस से तुम प्रसन्नता को पाओगे, उस ने रथ से शीघ्र उतर कर उस वृक्ष को निष्पत्र किया, इस के पीछे वह आश्चर्य से भरा हुआ राजा गिन्ती करके राजा को यह बोला कि जिस प्रकार कहे उतने ही फल हैं, हे राजन् मैंने तेरे इस अद्भुत

वृक्ष को देखा, हे नृप उस विद्या को सुना चाहता हूं जिस के द्वारा इस बात को कहते हो, हे नृप उस के पीछे जाने में शीघ्रता करने वाला राजा उसको बोला मुझको अक्ष हृदय का जानने वाला और संख्या करने में चतुर जानों, इसके पीछे बाहुक उस को बोला, हे पुरुषोत्तम इस विद्या को दे और मुझ से भी अश्व हृदय को ग्रहण कर, उस के पीछे राजा ऋतुपर्ण कार्य के गौरव और अश्व विद्या के लाभ से उस बाहुक को यह वचन बोला तथास्तु, यह अक्षों का परम हृदय (मंत्र) जिस प्रकार कहा है तुम ग्रहण करो, हे बाहुक मेरी निक्षेप अश्व हृदय तेरे पास स्थित रहै, ऋतुपर्ण ने इस प्रकार कहकर विद्या को नल के अर्थ दिया, अक्ष हृदय को जानने वाले उस नल के शरीर से कर्कोटक के तीक्षण विष को मात्र से निरंतर वमन करता कलि देवता निकला, तब उस पीडामान कलियुग की वह शाप आ निकली जिस से कर्षित वह राजा दीर्घकाल तक मूढ़ रहा, उस के पीछे विष से युक्त शरीर कलि ने अपने रूपको किया, निषध देशों के राजा कुपित नल ने उसको शाप देना चाहा, भय युक्त कंपित और कृतांजलि कलि उस को बोला हे राजन् कोप को रोको तुमको परम कीर्ति दूंगा, पूर्वकाल में इंद्रसेन की माता कुपितने मुझको शाप दिया, जब तुम से त्यागी गई, उस कारण से मैं अति पीड़ित हूं;

हे अपराजित राजेन्द्र मैं नाग राज के विष से दिन रात जलता अति दुखी तेरे शरीर के मध्य स्थित हुआ, तेरी शरण में प्राप्त हूं, इस मेरे वचन को सुन जो आतंद्रित मनुष्य लोक में तेरा कीर्तन करेंगे, मेरा उत्पन्न किया हुआ भय उनको कभी न होगा, जो तुम मुझ भय से पीड़ित और शरणागत को शाप नहीं दोगे, इस प्रकार कहे हुए राजाने अपने को रोका, उसके पीछे डरा हुआ कलि शीघ्र विभीतक वृक्ष में प्रवेश हुआ, तब नलके साथ बात करता हुआ कलि दूसरों से नहीं देखा गया, उस के पीछे शत्रु के वीरों को मारने वाला राजा निषध ज्वर से रहित हुआ कलि के अलग होने पर राजा इसके फलों को गिनकर, बड़े तेज और परम आनंद से युक्त तेजस्वी रथ पर चढ़कर वेगवान घोड़ों के द्वारा चला, और कलियुग के मिलाप से विभीतक वृक्ष अधम माना गया, नलने पक्षियों की तुल्य बारंबार उछलते, उत्तम घोड़ों को प्रेरित किया और वह बड़ा यशस्वी राजा अति प्रसन्न मन के साथ विदर्भ पुरी के सन्मुख चला, नल के दूर चले जाने पर कलि भी अपने गृह को गया, हे राजन् उसके पीछे पृथ्वी पति राजा नल ज्वर से मुक्त हुआ केवल रूप से भिन्न रहा ॥

एकोविंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

द्वाविंशतितमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले उस के पीछे मनुष्यों ने सायंकाल पर विदर्भ पुरी में प्राप्त सच्चे पराक्रमी ऋतुपर्ण को राजा भीम से कहा, वह राजा रथ घोष से सब दिशाओं और विदिशाओं को नादित करता भीम के बचन से कुंडनपुर में प्रवेश हुआ, उस के पीछे वहां नल के घोड़ों ने रथ के शब्द को सुना और सुनकर हींसे जैसे पूर्व काल में नल के समीप, दमयंती ने नल के उस रथ घोष को सुना जैसे वर्षा के आगमं में गरजते मेघ का गंभीर शब्द होता है, बड़े शब्द वाले नाद को सुनकर बड़े आश्चर्य से युक्त हुई दमयंती तथा घोड़ों ने रथ घोष को उस के समान जाना जैसे पूर्व काल में नल के हाथ से घोड़ों के ग्रहण करने पर होती थी, प्रसादों पर स्थित मोरों और शालाओं में स्थित हाथियों और घोड़ों ने उस राजा के रथ की घोष को सुना, हे राजन मेघ शब्द के उत्सुक मोर तथा हाथी उस रथ के शब्द को सुनकर मुख को ऊंचा करके शब्द करने लगे, दमयंती बोली जिस प्रकार यह रथ शब्द पृथ्वी को पूर्ण करता मेरे चित्त को पूरण करता है यह राजा नल ही है; फिर जो मैं उस चंद्रमुखी असंख्येयगुण वाले बीर नल को नहीं देखूं तो नाश को पाऊंगी संशय नहीं, जो मैं अब इस बीर की भुजाओं के बीच में जिन का स्पर्श

सुखदाई है प्रवेश नहीं करती हूं तो मैं नहीं हूंगी संशय नहीं, जो मेघ की तुल्य शब्दवान राजा नल मुझ को प्राप्त नहीं होता है, तो सोने की तुल्य प्रभावान् अग्नि में प्रवेश करूंगी, जो सिंह विक्रान्त और मतवाले हाथी की तुल्य पराक्रमी राजेंद्र नल मेरे पास नहीं आता है तो नाश को पाऊंगी, संशय नहीं, मैं कुछ झूठ को स्मरण नहीं करती हूं और न अपकारता को स्मरण करती हूं और कभी स्वतंत्रताओं में भी वचन के प्रतिज्ञाति काल को उल्लंघन नहीं किया, मेरा प्रभु वीर राजा नल क्षमावान और अधिक दाता भी है एकांत में अर्थात स्त्रियों के मध्य सत्पुरुषों के आचार पर बरताव करने वाला क्लीव की समान है, विना उस प्यारे के शोक से दिनरात उस के गुणों को स्मरण करती मुझ तत्पराका यह हृदय फटा जाता है, हे भरत वंशी इस प्रकार वह नष्ट ज्ञान और विलाप करने वाली दमयंती पवित्र यश वाले नल के दर्शन की इच्छा से महा भवन पर चढ़ी, उस के पीछे वार्ष्णेय और बाहुक के साथ रथ में स्थित राजा ऋतुपर्ण को मध्यम कक्षा में देखा, उस के पीछे वार्ष्णेय और बाहुक ने उत्तम रथ से उतरकर उन घोड़ों को छोड़कर रथ को स्थापन किया, वह राजा ऋतुपर्ण रथ के ऊपर से उतर कर भयानक पराक्रमी महाराज भीम के समीप स्थित हुआ, उस के पीछे भीम ने बड़ी पूजा के साथ उस को

लिया राजा ऋतुपर्ण उस राजा से पूजित हुआ, वहां रम्य कुंडनपुर में वास करने वाले और बारंबार देखने वाले उस राजा न कुछ नहीं देखा, तब उस राजा ने राजा विदर्भ के साथ मिलकर, अकस्मात शीघ्र प्राप्त स्त्री मंत्र को नहीं पाया, हे भरत वंशी वह राजा से पूछा गया आप का आना शुभ हो, क्या कार्य है, उस बुद्धिमान सत्य पराक्रम राजा ऋतुपर्ण ने भी पुत्री के अर्थ आने को वर्णन नहीं किया, क्योंकि राजा या किसी राज पुत्र को नहीं देखा न स्वयंवर की कथा को और न ब्राह्मणों के समागम को; उस के पीछे कोशलाधिप राजा ने मन से विचार किया और इस को कहा कि आप को नमस्कार करने वाला आया हूं [अर्थात मिलने को आया हूं] आश्चर्य करते राजा भीम ने भी शत योजन से अधिक उस के नेक कारणों को मन से सोचा, यह नमस्कार करने वाला राजा दूसरे राजाओं को और बहुत ग्रामों को उल्लंघन कर प्राप्त हुआ इस के ठीक कारणों को नहीं जाना और उस के आने का कारण छोटा कहा, पीछे उत्तर काल में कारणों को जानूंगा जो होगा, उस राजा ने इस समय इस प्रकार विचार करके उस राजा को विदा नहीं किया, किन्तु बारंबार यह बोला कि थके हो विश्राम करो, प्रसन्न राजा से सत्कृत और प्रसन्न मन वह राजा, जिस के पीछे राजा के सेवक थे बताए हुए भवन में प्रवेश हुआ, हे नृप

वार्ष्णेय के साथ ऋतुपर्ण के चले जाने पर, बाहुक रथ को लेकर रथ शाला में गया, वह उन घोड़ों को छोड़कर और शास्त्र के अनुसार उपचर्या करके, और आप इन को आश्वासन करके रथ के उपस्थ पर बैठ गया, शोक से पीड़ित राजा विदर्भ की पुत्री दमयंती ने भी राजा ऋतुपर्ण को और सूत के पुत्र वार्ष्णेय को और उस प्रकार रूपवान बाहुक को देखकर चिंता की, कि यह किस के रथ का शब्द है, ऐसा बड़ा शब्द नल के रथ का था और उस राजा निषध को नहीं देखती हूं; निश्चय वह विद्या वार्ष्णेय ने सीखी होवै; उस कारण से अवश्य रथ का शब्द नल के रथ की तुल्य बड़ा हुआ, आश्चर्य कि ऋतुपर्ण भी वैसा ही है, जैसा राजा नल है, तथा यह रथ शब्द भी नल के रथ के तुल्य दिखाई देता है, हे राजन उस शुभा दमयन्ती ने इस प्रकार तर्कना करके नल को ढूंढ़ने अर्थ दूती को भेजा॥

द्वाविंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

—******×*×*****—

त्रयोविंशतितमोऽध्यायारंभः

दमयन्ती—हे केशिनी आओ और जानो कि यह विकृत ह्रस्व बाहुक रथ का चलाने वाला रथ के उपस्थ पर बैठा हुआ कौन है, हे अनिंदिते कल्याणी सावधान, तुम पास जाकर मृदु पूर्वक इस पुरुष को

कुशल पूछो, यहां मेरी बड़ी शंका है कि यह राजा नल होवै जिस प्रकार मेरे मन की तृप्ति और हृदय की निवृत्ति होवै, और जिस प्रकार पर्णाद के बचन हैं उनको कथा के अंत में कहना हे सुश्रेणि हे अनिंदिते तुम उत्तर को जानना, उस के पीछे सावधान दूती जाकर बाहुक को बोली, और भवन के ऊपर स्थित कल्याणी दमयन्ती भी देखने लगी, हे नरेंद्र आपका आना शुभ हो मैं आपकी कुशल पूछती हूं हे पुरुषोत्तम दमयन्ती के शुभ बचन को समझो, तुम कब चले और यहां किस अर्थ आये तुम न्याय के अनुसार तत्व बात को कहो दमयन्ती सुना चाहती है, बाहुक बोला महात्मा राजा कोशल ने ब्राह्मणों से सुना कि कल दमयन्ती का दूसरा स्वयंवर होगा, राजा इसको सुनकर शत योजन चलने वाले वायु की तुल्य वेगवान मुख्य घोड़ों के द्वारा चला और मैं इसका सारथी हूं, केशिनी बोली तुम में जो यह तीसरा है वह कहां से आया फिर किस का पुत्र है और तुम किस के पुत्र हो और यह कर्म तुम में कैसे स्थापित हुआ, बाहुक बोला हे भद्रे यह पवित्र यश वाले नल का सारथी वार्ष्णेय नाम से विख्यात है वह नल के निष्फल जाने पर राजा ऋतुपर्ण के पास स्थित हुआ, और अश्व विद्या में कुशल मैं भी आप राजा ऋतुपर्ण की ओर से सारथ्य और भोजन बनाने में नियत किया गया, केशिनी बोली फिर

वार्ष्णेय जानता है कि राजा नल कहां गया है वा-
हुक इसने किसी प्रकार तुम से कहा हो, बाहुक
बोला यह वार्ष्णेय शुभ कर्मा नल के पुत्र और पुत्री
को यहां छोड़कर फिर इच्छा के अनुसार चला गया
वह राजा निषध को नहीं जानता है, हे यशस्विनी
दूसरा कोई पुरुष भी नल को नहीं जानता है वह
राजा नष्ट रूप इस लोक में गुप्त विचरता है, जो
इस की प्रिया है वह आप ही नल को जानती है
निश्चय नल अपने चिन्हों को कभी नहीं कहता है के-
शिनी बोली तब जो यह ब्राह्मण इन नारी वचन को
वारंवार कहता अयोध्यापुरी को गया, हे छलिया
तुम कहां हो जो मेरे अर्द्ध वस्त्र को काटकर और
मुझ अनुरक्त प्रिया सोती को वन में छोड़कर चले
गये, निश्चय वह जिस प्रकार उपदेश की गई उ-
सी प्रकार बड़ी प्रतीक्षा करने वाली दिन रात दह्य-
मान और अर्द्ध वस्त्र से ढकी हुई है, हे वीर पार्थिव
उस दुख से निरंतर रुदन करने वाली उस प्रिया के
उत्तर को कहो और कृपा करो, हे महामति उस
के उस प्रिया आख्यान को कहो अनिंदिता दमयंती
उसी वचन को सुना चाहती है, पूर्वकाल में उस के
इस बचन को सुनकर तुमने जो उत्तर दिया उसको
दमयन्ती फिर तुमसे सुना चाहती है, बृहदश्व बोले हे
कुरुनंदन केशिनी ने इस प्रकार कहे हुए नल का
हृदय पीड़ित हुआ और दोनों नेत्र अश्रु से पूर्ण हुए,

उस दह्यमान मही पति ने अपने दुख को रोकर बाष्प से संदिग्ध वाणी के साथ फिर यह कहा, विफलता को प्राप्त कुलीन स्त्रियां आप आप को रक्षा करती हैं उन से सत्य स्वर्ग जीता गया, संशय नहीं, भर्त्ताओं से रहित भी कभी क्रोध नहीं करती हैं श्रेष्ठ स्त्रियां जिनका कवच सच्चे के चरित्र हैं प्राणों को धारण करती हैं जो वह उस विषमस्थ मूढ़ सुख हीन से त्यागी गई उस में क्रोध करने को योग्य नहीं है, प्राणयात्रा की इच्छावान पक्षियों से हृत वस्त्र और मनकी पीड़ाओं से दह्यमान की श्यामा क्रोध करने को योग्य नहीं है, सत्कृत अथवा असत्कृत भी उस अवस्था वाले राजा भ्रष्ट लक्ष्मी से हीन भूखे और व्यसन में डूबे पति को देखकर क्रोध करने को योग्य नहीं है, हे भरतवंशी इस प्रकार उस बचन को बोलता बड़ा दुखी मन नल अश्रुको न रोक सका और बहुत रोया, उस के पीछे उस केशिनी ने जाकर वह सब वृत्तान्त और उसके उस बिचार को दमयन्ती से कहा ॥

त्रयोविंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

—✻✻✻✻✻×✻×✻✻✻✻✻—

चतुरविंशतितमोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले फिर शोक से अति पूर्ण दमयंती उस वाक्य को सुनकर उस को नल शंका करती केशिनी को यह बोली, हे केशिनी फिर तुम जाओ और बाहुक में परीक्षा करो समीप स्थित और न बोलती तू इस के चरित्रों को देखो, हे भाविनि वहां पर जब कुछ कर्म कारण के साथ करें वहां उस चेष्टा करने वाले के चेष्टित को देखती परीक्षा कर, हे केशिनी हठ के साथ इस को अग्नि भी न देनी चाहिये और सब प्रकार शीघ्रता करने वाली तुम को इस याचना करने वाले के अर्थ जल न देना चाहिये, तुम इस सब को भले प्रकार बिचार उस का चरित्र मुझ से कहो जो दैव और मानुष कारण बाहुक में तुम से देखा गया हो, जो दूसरी बात भी देखो वह भी तुझ को मुझ से कहने योग्य है फिर दमयन्ती से इस प्रकार कही हुई वह केशिनी वहां गई, फिर उस अश्व विद्या के पंडित के लक्षणों को देखकर फिर आई उसने वह सब जैसा वृत्तान्त था दमयंती से कहा उसने जो दैव मानुष निमित्त बाहुक में देखा वह सब कहा, केशिनी बोली हे दमयंती यह पुरुष जल स्थल के दृढ़ शौच का रखने वाला है इस प्रकार मनुष्य पहिले न कहीं देखा और सुना भी नहीं, यह छोटे द्वार को पाकर कहीं नहीं झुकता है उस

को देखकर छोटा द्वार भी सुख पूर्वक बड़ा होजाता है , छोटे होने पर भी इस का छिद्र बहुत बड़ा हो जाता है और ऋतुपर्ण के अर्थ नाना प्रकार के भोजन और पशुओं का बहुत मांस राजा भीम ने वहां भेजे उन के प्रक्षालन अर्थ वहां पर घड़े धरे गये, उस के पीछे उस बाहुक से देखे हुए वे मटके पूर्ण हुए फिर बाहुक प्रक्षालन करके और चूल्हे पर धर कर, और एक मुष्टि तृण लेकर उस को सूर्य के तेज से उद्दीप्त किया इस के पीछे वहां अकस्मात् अग्नि प्रज्वलित हुई , उस बड़े आश्चर्य को देखकर आश्चर्य युक्त मैं यहां आई और मैंने उस में दूसरे बड़े आश्चर्य को देखा , हे शुभे जो यह अग्नि को स्पर्श करके भी दग्ध नहीं होता है उस का जल बिना रोक इच्छा के अनुसार शीघ्र प्राप्त होता है , मैंने दूसरा बहुत बड़ा आश्चर्य देखा जो उसने पुष्पों को लेकर हाथों से धीरे २ मर्दन किया हाथों से मर्दन किये हुए वे पुष्प मलिन न हुए , फिर भी वे पुष्प प्रफुल्लित सुंदर गंध वाले होते हैं मैं इन अद्भुत चिन्हों को देखकर शीघ्र आई ; बृहदश्व बोले फिर दमयंती ने पवित्र यशवान नल के चेष्टित को सुनकर कर्म चेष्टाओं से सूचित नल को प्राप्त माना , फिर देह की चेष्टाओं से बाहुक को भर्त्ता शंका करती और रोती दमयंती मधुर वाणी के साथ केशिनी को बोली हे भाविनी फिर जाओ और रसोई गृह से प्रमत्त बाहुक के ब-

बनाये हुए उष्ण मांस को यहां लाओ, हे कुरुनंदन उस के पीछे उस प्रिय कारिणी केशिनी ने शीघ्र बाहुक के समीप जाकर और उस अति उष्ण मांस को लेकर उसी क्षण, दमयंती के अर्थ दिया नल के बनाये हुए मास के योग्य वह दमयंती पूर्व काल में बहुत बार, खाकर और सूत को नल मान कर अति दुखी पुकारी हे भरत वंशी बड़ी बिकलता को पाकर फिर मुख को धोकर, केशिनी के साथ पुत्र और पुत्री को भेजा उस के पीछे बाहुक रूप राजा ने अपने भ्राता के इंद्र सेना कन्या को जानकर, और सन्मुख जाकर और मिलकर गोद में बिठला लिया फिर बाहुक देव कुमार की उपमा रखने वाले पुत्र पुत्री को पाकर, अति दुख से व्याप्त मन ऊंचे स्वर से रोया तब राजा निषध बारंबार बिकार को दिखलाकर, और अकस्मात पुत्र पुत्री को देखकर केशिनी को यह बोला हे भद्रे यह जोड़ा मेरे पुत्र पुत्री के समान है इस कारण से मैंने देखकर अकस्मात् अश्रु को छोड़ा, मनुष्य बहुत बार आने वाली तुझ को काम दोष से शंका करें और हम देश के अतिथि हैं हे भद्रे सुख पूर्वक जाओ ॥

चतुरविंशांततमोऽध्यायः समाप्तः

—✻✻✻×✻×✻✻✻—

पञ्चविंशतितमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले फिर केशिनी ने पवित्र यशवाले बुद्धिमान बाहुक के सब विकार को देखकर और आकर सब वृत्तान्त दमयन्ती से कहा, उसके पीछे दुखसे पीड़ित दमयन्ती ने नलके दर्शन की इच्छासे फिर केशिनी को माता के समीप भेजा, मैंने बाहुक को नलकी शंका से बहुत प्रकार से परीक्षा किया मेरा एक संशय रूप में है मैं आप जाना चाहती हूं, हे माता यह भवन में प्रवेश करो अथवा मुझे आज्ञा देने को योग्य हैं विदित या अज्ञात को मेरे पितासे कहो, फिर दमयन्ती से इस प्रकार कही हुई उस देवी ने पुत्री के उस अभिप्राय को राजा भीम से कहा और उस राजाने आज्ञा दी, हे भरतर्षभ उस माता पिता से अनुज्ञात ने नल को प्रवेश कराया जहां उसका गृह था, राजा नल अकस्मात उस दमयंती को देखते ही शोक दुख से आविष्ट और अश्रु से परिप्लुत हुआ, तब वर वर्णिनि दमयंती उस रूपवान नल को देखकर तीव्र शोक से आविष्ट हुई हे महाराज उस के पीछे कषाय वस्त्र और जटाधारी मलिन शरीर दमयंती बाहुक को यह वचन बोली, हे बाहुक तुमने पूर्व कालमें कोई धर्मज्ञ देखा जो पुरुष सोती हुई स्त्री को वन में छोड़कर चलागया, फिर पवित्र यशवाले नलके सिवाय कौन पुरुष श्रम

से मोहित निष्पाप प्रिया भार्या को निर्जन वन में छोड़ कर चला जावे, मैंने अज्ञानता से उस राजाका कौन अपराध किया जो मुझ निद्रा से पीड़ित को वन में छोड़ कर चला गया; मैंने पूर्वकाल में साक्षात देवताओं को छोड़कर जो वह वरा उस ने मुझ अनुव्रता पुत्रवती और सब प्रकार से चाहने वाली को कैसे त्याग किया, अग्नि के पास तथा देवताओं के समीप हाथको पकड़कर और प्रीति रखूंगा यह सत्य प्रतिज्ञा करके विवाह किया वह कहां गई; हे अरिंदम इस बचन को कहने वाली दमयंती के नेत्रों से शोक से उत्पन्न और दुखरूप बहुत जल गिरा, नल अत्यंत कृष्णसार और रक्तांत नेत्रों से गिरते हुए उस नल को देखकर उस शोक से पीड़ित दमयंती को यह बोले, जो मेरा राज्य नष्ट हुआ मैंने आप उसको नहीं किया हे भीरु कलिने उस को किया जो मैंने तुझ को त्यागा जो पहिले धर्मरूप कष्ट के मध्य तुझ बनस्थ दुखी और दिन रात मेरा शोच करने वाली के शापसे अमित हुआ, तेरे शाप से दह्यमान वह कलि मेरे शरीर में वास करने वाला हुआ तेरे शाप से निरंतर दग्ध वह अग्नि में अग्नि की तुल्य हत हुआ हे शुभे वह मेरे निश्चय और तप के द्वारा जीता गया इस दुख के अंत में हम दोनों को ऐश्वर्यमान होना चाहिये, वह पापी मुझ को छोड़कर गया, हे विपुल श्रोणी उस के पीछे मैं यहां आया

मेरा दूसरा प्रयोजन नहीं है, स्त्री अपने अनुरक्त अनुव्रत भर्ता को छोड़कर किसी काल में दूसरे को कैसे वरे, जैसे तुम, इस राजा की आज्ञा से संपूर्ण पृथिवी पर घूमते हो कि निश्चय राजा भीम की पुत्री दूसरे भर्त्ता को वरैगी, वह इच्छा के अनुसार कर्म करने वाली अपने अनुरूप भर्त्ता को वरैगी इस प्रकार सुनकर राजा ऋतुपर्ण उपस्थित हुआ, फिर दमयंती नल के उस विलाप को सुनकर प्रांजलि कंपित और भय युक्त होकर वचन बोली, हे कल्याण रूप दोष के साथ मेरी शंका करने को योग्य नहीं हो, हे निषधाधिप मैंने देवताओं को छोड़कर तुम को वरा, फिर आपके आगमन अर्थ ब्राह्मण लोग मेरे वचनों को गाथाओं के द्वारा गाते सब दिशाओं को गये, हे पार्थिव उस के पीछे विद्वान पर्णाद नाम ब्राह्मण कौशलपुरी में ऋतुपर्ण के गृह तुम को मिला, हे राजा निषध उस ब्राह्मण से भले प्रकार वचन के कहने और उत्तर के लाने पर तुम्हारे बुलाने के अर्थ मैंने यह उपाय देखा, हे पृथ्वी के स्वामी महाराज लोक में आपके सिवाय दूसरा मनुष्य घोड़ों के द्वारा एक दिन में शत योजन जाने को समर्थ नहीं है, हे राजन् जिस प्रकार मैं मन से भी आपका कुछ असत्कार को नहीं करती हूं उस सत्य से आप के इन दोनों चरणों को स्पर्श करती हूं, यह जीवों का साक्षी वायु देवता इस लोक में घूमता है यह मेरे प्राणों

को छोड़ो जो मैं पाप को करती हूं, उसी प्रकार ब्रह्म से प्रेरित और तीक्ष्ण किरणवाले सूर्य देवता सदा भुवन पर घूमते हैं वह मेरे प्राणों को छोड़ो जो मैं पाप को करती हूं चंद्रमा (चिन्ता भिमाना देवता) साक्षी को समान सब जीवों के भीतर घूमता है वह मेरे प्राणों को छोड़ो जो मैं पाप करती हूं, निश्चय यह तीनों देवता संपूर्ण त्रिलोकों को धारण करते हैं इसको सत्य कहो, हे देवताओ अथवा मुझ को त्यागो, इस प्रकार कहे हुए वायु देवता अंतरिक्ष से बोले यह पाप करने वाली नहीं हैं हे नल तुम से सच कहता हूं, हे राजन दमयन्ती के शीलस्वभाव की निधि वृद्धि युक्त अच्छी रक्षित है हम तीन वर्ष के इस के साक्षी और रक्षक हैं, इस ने यह बड़ा उपाय तेरे अर्थ रचा, इस लोक में तेरे सिवाय दूसरा पुरुष एक दिन में शत योजन जाने वाला नहीं है, हे महीपति दमयन्ती तेरे साथ और तुम दमयंती के साथ योग्य हो, इस में तुम को शंका न करनी चाहिये, भार्या के साथ मिलो, उस प्रकार वायु देवता के बोलने पर पुष्पों की वर्षा गिरी, देवताओं की दुंदुभी बजी और आनंदरूपी पवन चली, हे भरतवंशी फिर उस अरिंदम राजा नल ने उस आश्चर्य को देखकर उस शंका रहित दमयंती को समीप बुलाया, उस के पीछे राजाने उस नाग राज को स्मरण करके उस अजर वस्त्र को धारण किया उस से अपने रूप

को पाया, तब भीम की पुत्री अनिंदिता दमयन्ती स्वरूप धारी पवित्र यशवाले भर्त्ता को देखकर और आलिंगन करके ऊंचे स्वर से रोई, और पहिले की समान उस राजा नल ने भी दमयन्ती को आलिंगन किया और पुत्र पुत्री को भी यथावत प्रसन्न किया, उस के पीछे शुभानना और दीर्घ नेत्र वाली और उस दुख से व्याप्त दमयंती ने उसके मुखको अपनी छाती पर रखकर निरंतर स्वास लिये, हे पुरुषोत्तम उसी प्रकार नल भी उस शुचिस्मिता और मल से लिप्त अंग दमयन्ती को मिलकर शोक से भरा हुआ देरतक स्थिर हुआ, हे नृप उस के पीछे दमयंती की माता ने नल और दमयंती का जैसा वृत्तान्त था वह सब प्रीति के साथ राजा भीम से कहा, उस के पीछे महाराज भीम बोले कि मैं प्रभात समय सुख से बसे और स्नान आदि कर्म्म करने वाले नल को दमयंती के साथ पास आया हुआ देखूंगा, हे राजन् उस के पीछे रात्रि में वन में विचरने के सब पुरातन वृत्तान्त को कह और प्रसन्न दोनों साथ वास करने वाले हुए, परस्पर सुख चाहने वाले और हृष्ट संकल्प वे दोनों दमयंती और नल राजा भीम के गृह में बसे, इस के पीछे उस नल ने चौथे वर्ष में भार्या के साथ मिलकर और सब कामनाओं से सिद्ध अर्थ होकर परम आनंद को पाया, और दमयंती भी भर्त्ता को मिलकर अत्यंत वृद्धि युक्त हुई जैसे अर्धो-

त्पन्न सस्य वाली पृथिवी जल को पाकर, वह दमयंती इस प्रकार मिलकर और तंद्रा को दूरकरके शांत ज्वर और हर्ष से वृद्धि युक्त नल और सिद्ध काम शोभामान हुई जिस प्रकार उदय हुए चन्द्रमा से रात्रि ॥

पञ्चविंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

षड्विंशतितमोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले इस के पीछे उस रात में वास करने वाले दमयंती के साथ समय पर राजा भीम को देखा, उस के पीछे सावधान नल ने श्वशुरको प्रणाम, किया उस के पश्चात शुभा दमयंती ने पिता को वंदना की, प्रभु भीम ने परम आनंद के साथ उस को पुत्र की समान लिया और वहां नल के साथ पतिवृता दमयंती को यथा योग्य पूजन कर आश्वासन किया, राजा नल ने उस पूजा की विधि के अनुसार लेकर, अपनी परिचर्या को यथावत उस से कहा, उस के पीछे उस प्रकार आए हुए नल को देखकर नगर में अति प्रसन्न मनुष्यों के हर्ष से उत्पन्न वड़ा शब्द हुआ, पताका और ध्वजा की माला रखने वाला नगर शोभामान हुआ, शुद्ध पुष्पों से युक्त और छिड़के हुए राजमार्ग अच्छे अलंकृत हुए और पुरवासियों के द्वारा द्वार पर पुष्प समर्द उप कल्पित

हुए, और देवताओं के सब स्थान सजे गये ऋतुपर्ण ने भी कपट रूप बाहुक नाम नल को, दमयंती से युक्त सुना वह राजा हर्षित हुआ राजा ऋतुपर्ण ने राजा नल को बुलाकर क्षमा चाही, उसे बुद्धि संमति ने हेतुओं के द्वारा उस को क्षमा किया वह सत्कृत मुस्कान सहित मुख वाला तत्व ज्ञाता बोलने वालों में श्रेष्ठ राजा ऋतुपर्ण राजा नल को यह वचन बोला कि आप प्रारब्ध से अपनी स्त्री से मिले इस प्रकार प्रसन्न किया, हे राजा नल मैंने अपने गृह में अज्ञात वास करने वाले आप का कुछ अपराध नहीं किया है, जो बुद्धि पूर्वक कोई अकार्य मुझ से किये गये हों, तुम उस के क्षमा करने योग्य हो, नल बोले हे राजन् तुम ने थोड़ा भी मेरा अपराध नहीं किया और करने पर भी मेरा कोप नहीं है मुझ से वह तुम्हारा क्षमा के योग्य है, हे राजन् पहिले भी मेरे सखा और संबंधी हो, हे महाराज इस के पीछे भी प्रीति करने को योग्य हो, मैं तुम्हारे पास भले प्रकार रची हुई सब कामनाओं के द्वारा सुख से बसा हूं, हे राजन् जिस प्रकार आप के घर में सदा संतुष्ट हुआ उस प्रकार अपने घर में नहीं, यह जो आप का ज्ञान [अक्षहृदय] मेरे पास स्थित है, उस का बदला दिया चाहता हूं, हे पार्थिव जो तुम मानते हो, राजा निषध ने इस प्रकार कहकर ऋतुपर्ण के अर्थ विद्या को दिया, उस राजा ऋतुपर्ण ने उस विद्या

को वेदोक्त कर्म के द्वारा ग्रहण किया , और अन्य हृदय को लेकर और अक्ष हृदय राजा निषध को भी देकर और दूसरे सारथी को लेकर अपने पुर को गया, हे राजन् ऋतुपर्ण के जाने पर राजा नल कुंडिन नगर में अति दीर्घ काल नहीं बसा ॥

षड्विंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

——:O:——

सप्तविंशतितमोऽध्यायारंभः

बृहदश्व बोले हे कौंतेय वह राजा निषध एक महीना वास करके और राजा भीम को पूछ कर थोड़े परिवार वाला पुर से निषध देशों को गया एक उज्वल रथ सोलह हाथी और पचास घोड़े और छैसौ प्यादों के साथ चला, वह शीघ्रता करने वाला क्रुद्ध बड़े मन वाला राजा नल पृथिवी को कंपित करता वेग से पुरमें प्रवेश हुआ, उसके पीछे वीरसेन का पुत्र नल पुष्कर को मिलकर बोला कि फिर खेलें मैंने बहुत धन इकट्ठा किया , दमयंती और जो कुछ दूसरा धन विद्यमान है यही मेरा पण है पुष्कर तेरा पण राज्य है, फिर द्यूत प्रवृत करो यह मेरी निश्चित मति है तेरा कल्याण हो एक पांसे से प्राणों का पण करें, दूसरे के राज्य को लेकर वा धन को जीत कर पुनर्द्यूत देने के योग्य है यह परम

धर्म कहा जाता है, जो तुम द्यूत को नहीं चाहते तो युद्ध को प्रवृत्त करो हे नृप निश्चय द्वैरथ युद्ध से तेरी व मेरी शांति हो जैसे तैसे जिस किसी उपाय से भी यह राज्य वंश के भोगने अर्थ समझना चाहिये यह बड़ों की आज्ञा है, हे पुष्कर अब दोनो में से एक बात में बुद्धि करो अक्षवती सभा में खेलने से अथवा युद्ध में धनुष को नवाओ, फिर नल से इस प्रकार कहा हुआ पुष्कर हंसता हुआ अपनी जयको ध्रुवमान कर राजा को बोला, हे नल तुम ने प्रारब्ध से पण के अर्थ धन को इकट्ठा किया और प्रारब्ध से दमयंती के पाप कर्म ने क्षय को पाया, हे महाबाहु राजा नल प्रारब्ध से स्त्री सहित जीवते हो निश्चय इस जीते हुए धन से भले प्रकार अलंकृत दमयंती प्रत्यक्ष में मेरे समीप स्थित होगी जैसे स्वर्ग में अप्सरा इंद्र के पास में, सदा तुम को स्मरण करता हूं और प्रतिज्ञा भी करता हूं, असुहृदयगणों के साथ खेलने में मेरी प्रसन्नता नहीं होती है अब मैं वरारोहा अनिंदिता दमयंती को जीत कर, कृत कृत्य होऊं, वही सदा मेरे हृदय में वर्तमान रहती है, फिर कुपित नल ने उस बहुत अनुचित बोलने वाले के उन वचनों को सुनकर, खड्ग से शिर को काटना चाहा, फिर रोष से रक्त नेत्र राजा नल मंद मुस्कान करता उस को बोला, पण करें क्या बकता है हारा हुआ नहीं बकेगा, इस के पीछे पुष्कर और नल का द्यूत प्रवृत्त हुआ,

हे युधिष्ठिर तेरा कल्याण हो वह पुष्कर रत्न को छोड़ के समूह और प्राण के साथ पण किया हुआ भी एक ही पण में नल से हारा, राजा पुष्कर को जीतकर हंसता हुआ यह बोला यह सब मेरा राज्य अव्यग्र और हतकंटक है, हे राजाओं में नीच दमयंती तुझ से देखने योग्य नहीं है, मूढ़ परिवार सहित तुम ने उस के हासभाव को पाया, पूर्वकाल में वह कर्म तुमने नहीं किया जिस से मैं जीता गया वह कर्म कलि ने किया, हे मूढ़ तू उस को नहीं जानता है, मैं किसी प्रकार दूसरे के किये हुए दोष को तुझ से धारण नहीं करता, तुम सुख पूर्वक जीवो, तेरे प्राणों को छोड़ता हूं, उसी प्रकार सब संभार और तेरे निज अंशको देता हूं और उसी प्रकार तुझ में मेरी प्रीति है हे वीर इस में संशय नहीं, मेरी सुहृदता भी तुझ से कभी दूर न होगी, हे पुष्कर तू ही मेरा भ्राता है शत वर्ष तक जीओ, सत्य विक्रम नल ने इस प्रकार भ्राता को सांत्वन करके और बारंबार मिल कर निजपुर को भेजा, हे राजन् तब राजा नल से इस प्रकार आश्वासन किये हुए पुष्कर हाथ जोड़कर नमस्कार करके उस पवित्र यशवाले नल को उत्तर दिया, हे राजन् आप की कीर्ति अक्षय हो और सुखी अयुत वर्ष तक जीवो जो मेरे प्राणों को और राज्य को छोड़ते हो, तब राजानल से उस प्रकार सत्कृत राजा पुष्कर एक मास वास करके हृष्ट और सुजन

से आवृत अपने पुर को गया, हे पुरुषोत्तम बड़ी सेना और विनीत सेवकों के साथ शरीर से सूर्य की तुल्य प्रकाशवान निजपुरी को गया, श्रीमान राजा नल उस बड़े धनवान और आरोग्य पुष्कर को भेजकर अत्यंत शोभित पुरी में प्रवेश हुआ, राजा निषध ने प्रवेश करके पुरवासियों को सांत्वन किया अति हृष्ट रोमशरीर पुरवासी देशवासी, और सब मंत्री आदि मनुष्य हाथ जोड़कर बोले हे राजन्! अब पुर और देश से भी निवृत हैं और उपासना करने को फिर प्राप्त हुए जैसे देवता इंद्र को ॥

सप्तविंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

——

अष्टा विंशतितमोऽध्यायारंभः

वृहदश्व बोले पुर के प्रति शांति और हृष्ट होने और महा उत्सव के प्रवृत होने पर राजा नल ने बड़ी सेना के द्वारा दमयंती को बुलाया, शत्रुओं के वीरों को मारने वाले बड़े बुद्धिमान भयानक पराक्रमी राजा भीम पिताने भी दमयंती को सत्कार करके भेज दिया, पुत्र सहित दमयंती के आने पर राजा नल प्रसन्न रहने लगा जैसे देवताओं का राजा नंदन वनमें, उसके पीछे उस राजा के प्रताप ने प्रकाशता को पाया और जंबू द्वीप में शोभामान हुआ महायशमान

ने उस राज्य को लेकर शासन किया, और विधि के अनुसार पूर्ण दक्षिणा वाले नाना प्रकार के यज्ञों से पूजन किया, हे राजन् उसी प्रकार तुम भी सुहृद्गणों के साथ थोड़े काल में प्रकाशमान होंगे, हे नरोत्तम नरतर्षभ उस शत्रु के पुरको जीतने वाले नलने खेलने से भार्या के साथ ऐसे दाव को पाया, हे पृथ्वी पति अकेले नल ने ऐसे घोर और बड़े दुख को पाया और फिर बड़े उदय को प्राप्त किया, हे पांडव फिर तुम भ्राताओं और द्रोपती के साथ धर्म को ही विचारते इस महावन में रमते हो, हे राजन् तुम सदा वेद वेदांग पारग महाभाग ब्राह्मणों के साथ रहते हो उस स्थानपर कौन विलाप है, कर्कोटक नाग का नल दमयंती का और राज ऋषि ऋतुपर्ण का कीर्त्तिने कलि नाशक है, हे अच्युत राजा युधिष्टिर इस कलि नाशक इतिहास को भी सुन कर तुझ से पुरुष से आश्वासित होना योग्य है, तुम सदा पुरुषार्थ की अस्थिरता विचार कर उस के उदय और नाश में भी चिंता करने को योग्य नहीं हो, हे नृपति इस इतिहास को सुनकर आश्वासित हो मत शोच कर, हे महाराज तुम दुख में विषाद करने को योग्य नहीं हो,दैव के विषमावास्थित होने पर और पौरुष की अफलता पाने पर सत्वापाश्रय मनुष्य आप को विषाद युक्त नहीं करते हैं, जो पुरुष नल के इस बड़े चरित्र को कहेंगे और निरंतर सुनेंगे भी उनको

अलक्ष्मी नहीं होगी, इस पुराण सनातन उत्तम इतिहास को सुनकर उस के अर्थ सिद्ध होगें और धन्यता को प्राप्त होगा, यह पुत्र पौत्र पशु और नरों में श्रेष्ठता को पाता है, वह आरोग्य और प्रीति मान होगा संशय नहीं, हे पार्थिव जो तुम पांशे के भय से डरते हो कि मुझ को फिर बुलावेगा सो मैं तेरे उस भय को नष्ट करूंगा, हे सत्यपराक्रम कुंती पुत्र मैं संपूर्ण अक्ष हृदय को जानता हूं ग्रहण करो प्रसन्न मैं तुम से कहता हूं, वैशंपायन बोले उस के पीछे प्रसन्न राजा वृहदश्व जी को बोला हे भगवन मैं अक्षय हृदय को तत्व पूर्वक जाना चाहता हूं, बड़े तेजस्वी ऋषि ने फिर महात्मा पांडव के अर्थ अक्ष हृदय को दिया और अश्व विद्या को देकर स्नान आदि के करने को गये, वृहदश्व के चले जाने पर दृढ़ वृतवाले युधिष्ठिर ने तहां २ तीर्थ पर्वत वन से आने वाले और मिले हुए तपस्वी ब्राह्मणों से उस तप में वर्तमान वायु भक्षी बुद्धिमान पांडव अर्जुन को सुना, कि महाबाहु अर्जुन दुख से प्राप्त होने के योग्य तप में स्थित हैं वैसा दूसरा कोई उग्र तपस्वी पहिले नहीं देखा, जैसा तपस्वी नियत व्रत अकेला घूमने वाला मुनिरूप देहधारी धर्म की तुल्य श्रीमान पांडव अर्जुन है, हे राजन् पांडव युधिष्ठिर ने महावन में तप करने वाले उस प्रिय भ्राता कौंतेय अर्जुन को सुनकर शोच किया, फिर महावन में शरण

चाहने वाले युधिष्ठिर ने दधूसान हृदय के साथ नाना प्रकार के ज्ञानी ब्राह्मणों को पूछा ॥

अष्टा त्रिंशतितमोऽध्यायः समाप्तः

सिती आसाढ़ वदी १४ संवत् १९४१ पूर्ण शुभ मस्तु

नोटिस